राजस्थान का भूगोल

हस्तलिखित नोट्स by Aadarsh Sir

REET, पटवार,वनपाल, वनरक्षक,BSTC,PTET,ग्रामसेव

ऐसे ही आपको हर विषय के नोट्स उपलब्ध कराते रहेंगे, आप RAJASTHAN CLASSES CHANNEL को SUBSCRIBE जरुर कर लीजिए डेली क्लास ज्वाइन करें पूर्णत निशुल्क

नोट-अपने प्रयास से सभी तथ्य सही किए है – फिर भी किसी प्रकार की त्रुटी पाई जाती है

तो राजस्थान क्लासेज जिम्मेदार नही होगा, आप सम्पर्क कर सकते है! Whatsapp- 8107670333

RAJASTHAN CLASSES

पीडीएफ के किसी भी भाग पर क्लिक करने पर आपको youtube क्लास मिल जाएगी

सभी पीडीएफ निशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी
पीडीएफ को ज्यादा से ज्यादा शेयर जरुर करें
आपके हित में सदैव तत्पर : आदर्श कुमावत

राजस्थान क्लासेज : 8107670333

राजस्थान क्लासेज के साथ जुड़कर अपनी तैयारी को पंख दीजिये और विषयानुसार बनी प्लेलिस्ट से पढ़कर अपनी तैयारी बेहतर करें

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

RAJASTHAN CLASSES

राजस्थान का भूगोल

	पाठ्यक्रम का नाम	पेज न०
01.	राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार -	1-24
02.	राजस्थान की प्रमुख नदियाँ →	25-39
03.	राजस्थान की प्रमुख झीलें →	40-44
04.	राजस्थान की जलवायु एवं मृदा -	45-47
05.	राजस्थान के बांध एवं बावड़ियां -	48-50
06	राजस्थान में वन एवं वन्यजीव -	51-66
	राष्ट्रीय उद्यान एवं अभयारण्य	—o—
07.	राज्य की सिंचाई परियोजनाएं -	67-72

RAJASTHAN CLASSES

RAJASTHAN CLASSES

नोट-हमारे प्रयास से सभी तथ्य सही अंकित है – फिर भी किसी प्रकार की त्रुटी पाई गई है
तो इसके लिए राजस्थान क्लासेज जिम्मेदार नही होगा, आप सम्पर्क कर सकते है!

Whatsapp- 8107670333

राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार
(आकृति एवं भौतिक स्वरूप)

⇒ राजस्थान का परिचय - एक नजर ←

⇒ भारत के उत्तर पश्चिम में स्थित
⇒ देश का सबसे बड़ा राज्य
(मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ के अलग होने के बाद (1 नवम्बर 2000)
⇒ कुल क्षेत्रफल - 342239 (वर्ग किमी.)
132140 (वर्ग मील)
⇒ भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41%
⇒ जनसंख्या की दृष्टि से सातवां स्थान

⇒ राजस्थान का भौतिक स्वरूप अत्यधिक जटिल, विशिष्ट एवं विविधतापूर्ण है।

⇒ राजस्थान भूखण्ड विश्व के प्राचीनतम मध्यजीवी महाकल्प के पैंजिया भूखण्ड के दक्षिणी भाग गोण्डवाना लैण्ड का अवशेष है।

: राजस्थान की स्थिति :
⇒ प्रदेश 23°3' उत्तरी अंक्षाश से 30°12' उ० अंक्षाश
(कुल अंक्षाशीय विस्तार 7°9)
⇒ देशान्तरीय विस्तार - 69°30' पूर्वी देशान्तर से
78°17 पूर्वी देशान्तर तक
कुल देशान्तरीय विस्तार 8°47

⇒ राजस्थान का अधिकांश भाग कर्क रेखा
($23\frac{1}{2}$° या 23°30 उत्तरी अंक्षाश) रेखा के उत्तर में

RAJASTHAN CLASSES

⇒ कर्क रेखा राज्य के डूंगरपुर जिले की दक्षिण सीमा से होती हुई बांसवाड़ा के मध्य से गुजरती है।

⇒ कर्क रेखा के उत्तर में होने के कारण जलवायु की दृष्टि से राज्य का अधिकांश भाग उपोष्ण या शीतोष्ण कटिबंध में स्थित

Rajasthan Classes

(विस्तार)

उत्तर से दक्षिण की लम्बाई - 826 किमी
पूर्व से पश्चिम की लम्बाई - 869 किमी

अक्षांश 30°12 विस्तार - उत्तर में कोणा गांव (गंगानगर)
अक्षांश 23°3 दक्षिण में बोरकुण्ड गांव (कुशलगढ़, बांसवाड़ा)
देशान्तर 69°30 पूर्व में सिलावट गांव (राजाखेड़ा, धौलपुर)
देशान्तर 78°17 पश्चिम में कटरा गांव (सम, जैसलमेर)

(आकृति)

विषमकोणीय चतुर्भुज या पतंग के समान आकृति

सबसे पहले सूर्योदय एवं अस्त - धौलपुर
सूर्य की सर्वाधिक सीधी किरणे बांसवाड़ा पर जून माह में बिल्कुल सीधी किरणे।
सूर्य की सबसे तिरछी किरणे गंगानगर में कर्क रेखा के नजदीक एवं दूर होने पर

⇒ पूर्व से पश्चिम में सूर्योदय होने में 35 मिनट 8 सेकण्ड लगभग 36 मिनट का अन्तर

नोट - 1 डिग्री देशान्तर को पार करने में सूर्य को 4 मिनट का समय लगता है।

RAJASTHAN CLASSES

- स्थलीय सीमा - (पश्चिम सीमा)

कुल स्थलीय सीमा - 5920 किमी.

(अन्तराष्ट्रीय - 1070 + अन्तर्राज्यीय - 4850)

1070 पाकिस्तान के साथ (जिसे रेडक्लिफ लाइन)

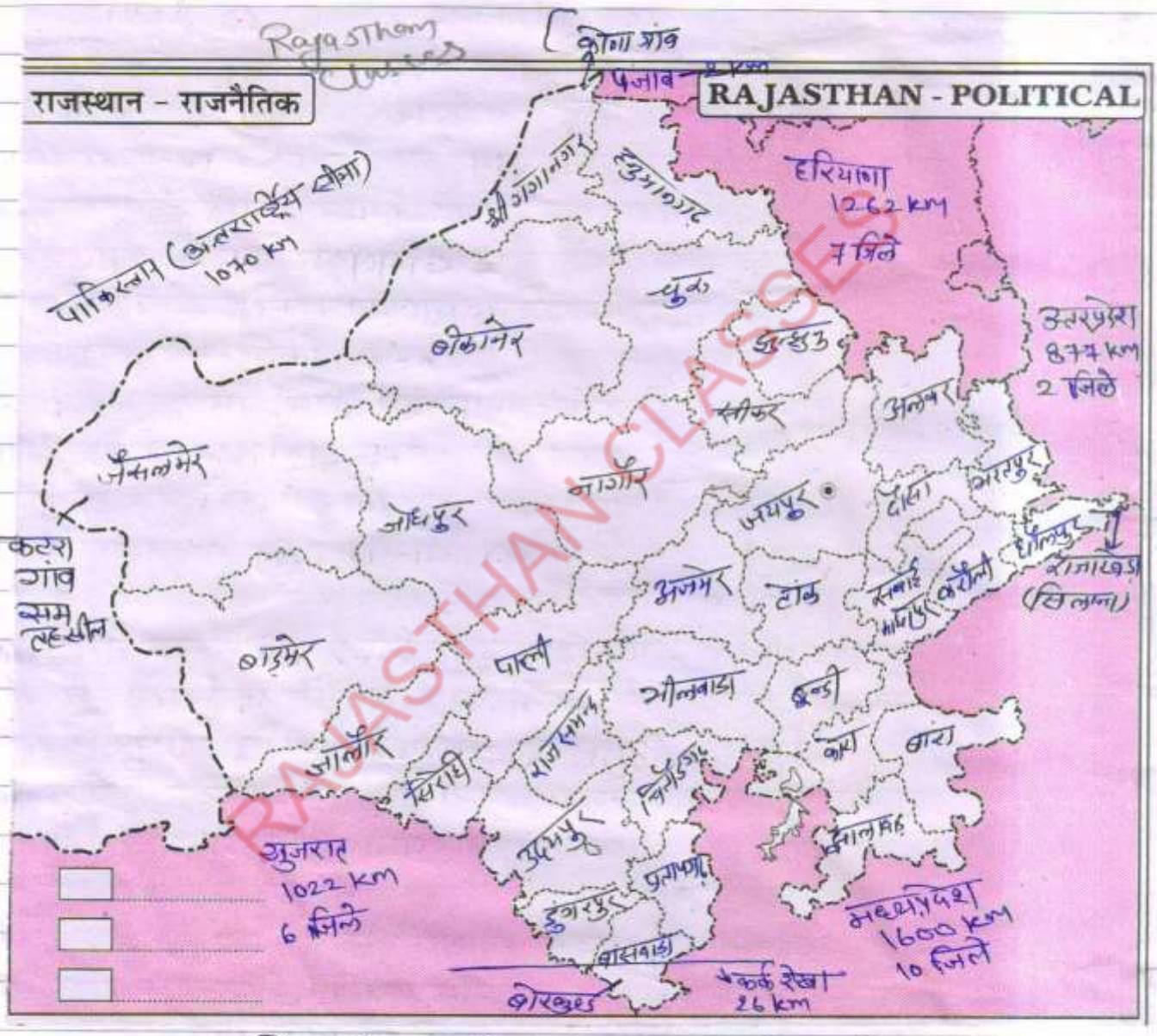

⇒ उत्तर से हिन्दुमलकोट श्रीगंगानगर से दक्षिण में मंगल गांव (बाखासर) बाड़मेर तक

⇒ सीमा के सर्वाधिक नजदीक शहर एवं जिला मुख्यालय = श्रीगंगानगर

⇒ सबसे दूर स्थित शहर एवं जिला मुख्यालय - बीकानेर

RAJASTHAN CLASSES

⇒ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से चार जिले सीमा बनाते है।

① श्री गंगानगर - 210 कि.मी.
② बीकानेर 168 किमी.
③ जैसलमेर 464 कि.मी.
④ बाड़मेर 228 कि.मी.

पाकिस्तान के कुल 9 जिले राजस्थान से सीमा बनाते है।

= दक्षिण पश्चिम =

⇒ गुजरात से कुल सीमा की लम्बाई 1022 किमी की लम्बाई

गुजरात एवं राज. के कुल 6-6 जिले

राज. के जिले - ① बांसवाड़ा ② उदयपुर ③ डूंगरपुर ④ सिरोही ⑤ जालौर ⑥ बाड़मेर

Rajasthan Classes

⇒ दक्षिण-पूर्व (म.प्र. (10) राज. (10)) 1600 km

मध्यप्रदेश से 10 जिलो की सीमा

धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, कोटा, बारां, झालावाड़, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा = (10)

⇒ पूर्व सीमा (उत्तरप्रदेश) 877 किमी.

(2 जिले राज) (2 जिले उत्तरप्रदेश)

① भरतपुर एवं ② धौलपुर

⇒ उत्तर-पूर्व (हरियाणा) 1262 किमी.

(7 जिले राज.) (हरियाणा 7 जिले)

हनुमानगढ़, चुरू, झुन्झुनु, सीकर, जयपुर, अलवर, भरतपुर (7)

RAJASTHAN CLASSES

उत्तर सीमा (पंजाब) 89 km
2-2 जिलो की सीमा
गंगानगर एवं हनुमानगढ़ (2)

⇒ सर्वाधिक लम्बी सीमा अन्तर्राष्ट्रीय: जैसलमेर
जो कि पाकिस्तान से लगती है।

⇒ सर्वाधिक लम्बी सीमा अन्तर्राज्यीय - झालावाड़
जो मध्यप्रदेश से लगती है।

⇒ सबसे कम लम्बी सीमा अन्तर्राष्ट्रीय - बीकानेर
जो पाकिस्तान से लगती है।

⇒ सबसे कम अन्तर्राज्यीय सीमा वाला जिला - बाड़मेर
जो गुजरात से लगती है।

⇒ राजस्थान की सबसे कम लम्बी अन्तर्राज्यीय सीमा
पंजाब से लगती है। 89 किमी.

⇒ राज्य की सबसे लम्बी अन्तर्राज्यीय
(1600 km) सीमा मध्यप्रदेश से मिलती है।

Rajasthan Classes

⇒ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा - (रेडक्लिफ लाइन)
सीमा रेखा के निर्धारण हेतु सर सिरील
रेडक्लिफ की अध्यक्षता में रेडक्लिफ सीमा
आयोग का गठन जिसकी रिपोर्ट 17 अगस्त 1947
को प्रकाशित हुई।

⇒ पाकिस्तान की सीमा से चार जिलो की
कुल 12 तहसीलें सीमा बनाती है।
श्रीगंगानगर - गंगनगर, करणपुर, रायसिंहनगर
अनुपगढ़ एवं घटखाना तह०
बीकानेर = कोलायत एवं खाजूवाला तह०।
जैसलमेर = पोकरण एवं जैसलमेर तहसीलें
बाड़मेर - शिव, रामसर, चौहटन तहसीलें।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ अन्तर्राज्यीय सीमावर्ती ऐसे जिले जो दो राज्यो से सीमा बनाते है।

(i) बांसवाड़ा - मध्यप्रदेश व गुजरात से
(ii) धौलपुर - मध्यप्रदेश व उत्तरप्रदेश से
(iii) भरतपुर - हरियाणा व उत्तरप्रदेश से
(iv) हनुमानगढ़ हरियाणा एवं पंजाब से

⇒

⇒ बाड़मेर जिला - जिसकी सीमा पाकिस्तान एवं गुजरात (राज्य व राष्ट्रीय) दोनो से सीमा

⇒ गंगानगर जिला - पाकिस्तान एवं पंजाब से सीमा

Rajasthan Classes

⇒ अन्तराष्ट्रीय सीमा वाले कुल जिले = (4)

⇒ अन्तर्राज्यीय सीमा वाले कुल जिले - 23

⇒ अन्तवर्ती जिले (किसी से सीमा नही) = 8

⇒ पाली जिले की सीमा आठ जिलो से लगती

→ अन्तवर्ती जिले - पाली, जोधपुर, नागौर, दौसा, टोंक, बून्दी, अजमेर, राजसमन्द

→ पाली सीमा वाले जिले - अजमेर, बाड़मेर, जालौर, जोधपुर, नागौर, राजसमन्द, सिरोही, जयपुर

RAJASTHAN CLASSES

⇒ क्षेत्रफल की दृष्टि से बड़ा जिला - जैसलमेर (38401 वर्ग किमी)

= सबसे छोटा जिला = धौलपुर
क्षेत्रफल - 3034 वर्ग किमी.

⇒ जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा जिला जयपुर जिला

⇒ जनसंख्या की दृष्टि से छोटा जिला - जैसलमेर

⇒ सबसे बड़ा शहर - जयपुर, सबसे छोटा कस्बा = बोरखेड़ा (बारां)

राजस्थान के भौतिक विभाग
या भू-आकृतिक प्रदेश

⇒ राजस्थान विश्व के प्राचीनतम भू-खण्डो का अवशेष है।

⇒ प्राक्-ऐतिहासिक काल (इयोसिन काल एवं प्लीस्टोसीन काल) में विश्व दो भूखण्डों में विभक्त था (i) अंगारालैण्ड (ii) गोंडवानालैण्ड जिनके मध्य टेथिस सागर भी विस्तृत था

⇒ राजस्थान में उत्तरी पश्चिमी मरु प्रदेश व पूर्वी मैदान इसी टेथिस सागर के अवशेष है।

⇒ जो कालान्तर में नदियों द्वारा लाई गई ललछट मिट्टी के द्वारा पाट दिए गए।

⇒ अरावली पर्वतीय एवं दक्षिणी पूर्वी पठारी भाग गोंडवाना लैण्ड के हिस्से है।

⇒ राजस्थान में विद्यमान उच्चावच व भौतिक स्वरूप को जलवायु व धरातल के अन्तरो के आधार पर मुख्यत: निम्न चार भागो में बांटा गया है।

(i) उत्तर पश्चिमी मरुस्थलीय (शुष्क प्रदेश)
(ii) मध्यवर्ती अरावली पर्वतीय प्रदेश
(iii) पूर्वी मैदानी भाग
(iv) दक्षिणी पूर्वी पठारी भाग।

RAJASTHAN CLASSES

(1) उत्तर पश्चिमी मरुस्थलीय भाग

North Western Desert

⇒ माना जाता है कि अपर टर्शियरी काल तक प.मरु. भाग पर टेथिस समुद्र विस्तृत था
⇒ जो कि भूगर्भिक हलचलों से धीरे-2 परिणाम स्वरूप खिसकता गया।
⇒ इस क्षेत्र में मौजूद खारे पानी की झीलें यहां टेथिस सागर होने का प्रमाण है।

⇒ मरुस्थल के पश्चिमी सीमा पाकिस्तान (रेडक्लिफ)
⇒ तथा पूर्वी सीमा अरावली पर्वमाला
⇒ दक्षिणी सीमा पर - गुजरात
⇒ एवं उत्तरी सीमा पर - पंजाब हरियाणा स्थित

- विशेषताएं एवं विवरण -

◆ ⇒ क्षेत्रफल - राज्य के कुल क्षेत्रफल का 61% भाग लगभग (20,9000) वर्ग कि.मी.
यह प्रदेश उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व में 640 किमी. लम्बा एवं पूर्व से पश्चिम में 300 किमी. चौड़ा है।
◆ ⇒ जनसंख्या - कुल जनसंख्या का लगभग 48%
◆ ⇒ जिले ⇒ जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर गंगानगर, हनुमानगढ़, चुरू, जालौर, नागौर झुन्झुनु, सीकर, पाली का पश्चिमी भाग (12 जिले)
◆ ⇒ वर्षा - 20 सेमी से 50 सेमी तक
न्यून वर्षा के कारण इसे शुष्क बालू का मैदान कहते
◆ ⇒ तापमान - गर्मियों में उच्चतम 49° से.ग्रे.
सर्दियों में 0° से.ग्रे. तक
◆ ⇒ जलवायु - शुष्क व अत्यधिक विषम

RAJASTHAN CLASSES

- ⇒ मिट्टी - रेतीली बलुई।
- ⇒ यह भू-भाग अरावली पर्वतमाला के उत्तर पश्चिम एवं पश्चिम में विस्तृत है।
- ⇒ यह मरुस्थल ग्रेट पेलियोआर्कटिक अफ्रीका मरुस्थल का ही विस्तृत भाग है। जो पश्चिमी एशिया के फिलीस्तीन अरब एवं ईरान होता हुआ भारत तक विस्तृत हो गया।
- ⇒ इसकी समुद्र तल से सामान्य ऊंचाई 200 से 300 मीटर है।
- ⇒ रेत के विशाल बालुका स्तूप इस भू-भाग की प्रमुख विशेषता है।
- ⇒ इस प्रदेश में लिग्नाइट, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस व लाइम स्टोन के विशाल भंडार मौजूद
- ⇒ प्रमुख नमक स्त्रोत - पचपदरा, डीडवाना लूणकरणसर लवणीय झीले।

- ⇒ इस क्षेत्र को दो भागों में बांटा जा सकता है
  (1) रेतीले शुष्क मैदान (2) अर्द्ध शुष्क मैदान

(1) - रेतीले शुष्क मैदान - (था)

पश्चिमी विशाल मरुस्थल या महान मरुभूमि

⇒ वर्षा का वार्षिक औसत 20 सेमी तक रहता है।

- बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, गंगानगर क्षेत्र

⇒ अधिकांश भाग बालुका स्तूपों से आच्छादित है।

⟹ शुष्क मैदान भी दो उपविभागो मे आते है
  (i) बालुकास्तूप युक्त मरुस्थलीय प्रदेश
  (ii) बालुका स्तूप मुक्त (रहित क्षेत्र)

RAJASTHAN CLASSES

⇒ ① बालुकायुक्त प्रदेश (बालुकास्तूप)
- यहां बालू रेत के विशाल टीले पाए जाते हैं।
- ये बालुकास्तूप वायु अपरदन एवं निक्षेपण का परिणाम है।
- इनका स्थानान्तरण मार्च से जुलाई माह के मध्य सर्वाधिक होता है।

⇒ पवनानुवर्ती (रेखीय) बालूका स्तूप
प्राय जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर क्षेत्र में इन पर वनस्पति पाई जाती है।

⇒ अनुप्रस्थ बालुका स्तूप - सूरतगढ़, झुन्झुनू, बीकानेर, दक्षिण गंगानगर, हनुमानगढ़, चुरु, क्षेत्र में ये बालुकास्तूप पवन की दिशा के समकोण बनते हैं।

⇒ पेराबोलिक बालुकास्तूप - सभी मरुस्थलीय जिलों में विद्यमान है। आकृति-हेयरपिन

⇒ तारा बालुका स्तूप - मोहनगढ़, पोकरण (जैसलमेर) सूरतगढ़ (गंगानगर)
मुख्यरूप से अनियतवादी एवं संश्लिष्ट पवनो के क्षेत्र में ही होता है।

⇒ नेटवर्क बालुका स्तूप - केवल हनुमानगढ़

ii) बालुकास्तूप मुक्त (रहित) प्रदेश
⇒ फलौदी एवं पोकरण तहसील के कुछ भाग
⇒ इस क्षेत्र को जैसलमेर बाड़मेर का चट्टानी प्रदेश कहते।
⇒ टेथिस सागर के पूर्ण अवशेष यहां पाए जाते हैं।
⇒ इन चट्टानों में वनस्पति अवशेष एवं जीवाश्म पाये।
⇒ जैसलमेर के राष्ट्रीय मरुउद्यान में स्थित आकल वुड फोसिल पार्क इसका (जीवाश्मों) का अनूठा उदाहरण है।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ यहां निम्न भूमि पाई जाती है।
⇒ कच्छ से बीकानेर की महान भूमि तक फैले हुए मरुस्थलीय भाग को लघु मरुस्थल कहते
⇒ निम्न भूमि पाई जाने के कारण वर्षा का पानी भर जाने से अस्थाई झीलो एवं दलदलों का निर्माण हो जाता है जिसे "रन क्षेत्र" कहा जाता है।

(2) अर्द्धशुष्क मैदान (राजस्थान बांगड़)
⇒ यह अर्द्धशुष्क प्रदेश (मैदान) 25 सेमी समवर्षा रेखा के पूर्व में स्थित है।
यह आन्तरिक प्रवाह क्षेत्र है।
उत्तरी भाग - घग्घर का मैदान
उत्पूर्वी भाग - शेखावाटी का आन्तरिक जलप्रवाह क्षेत्र
दक्षिणी पश्चिमी भाग - लूणी नदी बेसिन
मध्यवर्ती भाग - नागौरी उच्च भूमि

(i) घग्घर का मैदान -
हनुमानगढ़ एवं गंगानगर जिलों में विस्तृत घग्घर नदी प्रवाहित है जिसे मृत नदी कहते हैं।
इस नदी के पाट को हनुमानगढ़ में नाली कहते हैं।
पौराणिक काल की सहायक सरस्वती नदी अब विलुप्त है।

(ii) लूणी बेसिन या गाँडवाण क्षेत्र - लूणी एवं सहायक नदियों के अपवाह क्षेत्र को गाँडवाण प्रदेश।
इसमें जोधपुर, जालौर, पाली।
इस प्रदेश में जालौर सिवाना की पहाड़ियां ग्रेनाइट के लिए प्रसिद्ध है।
- लूणी नदी का पानी नमकयुक्त चट्टानों, नमक के कणों एवं मरुस्थलीय प्रदेश के अपवाह तंत्र के कारण खारा हो जाता है।

(iii) नागौरी उच्च भूमि प्रदेश -
राजस्थान बागड़ प्रदेश के मध्यवर्ती भाग को नागौर उच्च भूमि कहते है।
डीडवाना, कुचामन, सांभर, नावा खारे पानी की झीले है जहां नमक उत्पादित होता है।
गहराई में माइकाशिष्ट नमकीन चट्टाने है।

(iv) शेखावाटी का आन्तरिक प्रवाह क्षेत्र
इस भू-भाग में चुरु, सीकर, झुंझुनु एवं नागौर का उत्तरी भाग
⇒ बरखान प्रकार के बालुकास्तूपों का बाहुल्य।
⇒ आन्तरिक जल प्रवाह का क्षेत्र है।
नदिया - कातली, मेथा, रूपनगढ़, खारी आदि
⇒ इस भू-भाग में जल प्राप्ति हेतु कच्चे व पक्के कुओ का निर्माण किया जाता है। जिसे जोहड़ एवं नाडा भी कहते है।
⇒ मुख्य फसलें - बाजरा मोठ ज्वार
- वनस्पति - बबूल फोग खेजड़ा, कैर, बेर
- इन्दिरा गान्धी नहर मुख्य नहर एवं जीवन रेखा।
- ⇒ राष्ट्रीय मरु उद्यान प्रमुख वन्य जीव अभ्यारण्य जो राज्य का सबसे बड़ा वन्य जीव अभ्यारण्य। जैसलमेर एवं बाड़मेर जिलो में विस्तारित। यहां स्थित ऑकलवुड फॉसिल पार्क भी प्रसिद्ध।
- थार मरुस्थल थली या शुष्कबालू का मैदान के नाम से भी जाना जाता है।
- सम्पूर्ण थार मरुस्थल का लगभग 62% राजस्थान में
- विश्व का सर्वाधिक आबादी वाला मरुस्थल।
- विश्व का सर्वाधिक जैव विविधता वाला मरुस्थल।
- जनसंख्या घनत्व में भी सर्वाधिक है।

RAJASTHAN CLASSES

- ⇒ प्रमुख रन क्षेत्र - कानोड़, बरमसर, भाकरी पोकरण (जैसलमेर) बाप - जोधपुर धोब (बाड़मेर) प्रमुख रन क्षेत्र है।
- ⇒ 50 सेमी सम वर्षा रेखा।
- प्रमुख नदी - लूणी नदी (जो नागपहाड़ (अजमेर) से निकलकर पाली, जोधपुर, बाड़मेर एवं जालौर में बहकर कच्छ के रन में विलुप्त हो जाती है।
- पश्चिमी शुष्क मरुस्थल का लगभग 60% भाग बालुका स्तूपो से आच्छादित है।

- थार मरुस्थल विश्व का एकमात्र मरुस्थल है जिसके निर्माण में दक्षिणी-पश्चिमी मानसूनी हवाओं का मुख्य योगदान है।

RAJASTHAN CLASSES

(मध्यवर्ती अरावली पर्वतीय प्रदेश)
जिले - उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द
डूंगरपुर, प्रतापगढ़, भीलवाड़ा, सीकर
झुन्झुनु, अजमेर, सिरोही अलवर एवं [13 जिले]
पाली व जयपुर का कुछ भाग।

⇒ ये पर्वत श्रेणियाँ काफी ऊंची थी
(वर्तमान हिमालय से भी ऊंची)
परन्तु धीरे-2 आच्छादन के कारण नीचे हो गई।

- क्षेत्रफल - राज्य के सम्पूर्ण भाग का 9%
- जनसंख्या - कुल जनसंख्या का लगभग 10%
अधिकांशतः जनजातियां निवास करती है।
- वर्षा - 50 सेमी से 90 सेमी
सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान - माउंट आबू
(लगभग 150 सेमी)
- जलवायु - उपआर्द्र जलवायु
- मिट्टी - काली, भूरी लाल, कंकरीली मिट्टी

विस्तार - गुजरात में खेड़ ब्रह्मा
पालनपुर से लेकर उत्तर पूर्व में खेतड़ी
सिंघाना (झुन्झुनु) तक श्रृंखलाबद्ध रूप में है।
⇒ इस श्रृंखलाओं की चौड़ाई दक्षिण पश्चिम
में अधिक है जो धीरे-2 उत्तर पूर्व में
कम होती चली जाती है।
⇒ अरावली पर्वतमाला गोंडवाना लैण्ड का अवशेष
⇒ उत्पत्ति - इनकी उत्पत्ति भूगर्भिक इतिहास
के प्री. कैम्ब्रियन कल्प में
लगभग 650 मिलियन वर्ष पूर्व हुई।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ खनिज - ताम्बा, सीसा, जस्ता, अभ्रक चान्दी, लोहा, मैंगनीज पेल्सपार, ग्रेनाइट मार्बल, चूना पत्थर, पन्ना आदि।

⇒ मुख्य दर्रे - देसुरी की नाल, हाथी गुड़ा का दर्रा केवड़ा की नाल (उदयपुर) जीलवाड़ा (जीलवा) की नाल, सोमेश्वर नाल, सरुप घाट, दिवेर व हल्दीघाटी दर्रा (राजसमन्द)

⇒ राज्य की सर्वाधिक ऊंची चोटी (चोटी) गुरुशिखर (1722 मी.) सिरोही में है।

⇒ अरावली की कुल लम्बाई 692 किमी. जिसमें से 550 किमी 80% राजस्थान में है।

⇒ अरावली पर्वत विश्व के प्राचीनतम वलित पर्वत।

⇒ अरावली ढालों पर मक्का की खेती की जाती।

⇒ अरावली पर्वतीय प्रदेश की समुद्र तल से औसत ऊंचाई 930 मीटर है।

⇒ अरावली के पूर्व में गिरने वाला पानी नदियों द्वारा बंगाल की खाड़ी में तथा पश्चिम में गिरने वाला पानी अरब सागर में।

⇒ अरावली की मुख्य श्रेणी क्वार्टजाइट चट्टानों की बनी है।

⇒ अरावली के उत्तरी पूर्वी छोर पर पोलवार का पठार है।

RAJASTHAN CLASSES
टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें
Website
YouTube
Pdf को अपने मित्रो के साथ शेयर जरुर करें

⇒ इस पर बहने वाली नदियों की घाटियों में अनेक सभ्यताएं विकसित हुई
(i) आहड़ सभ्यता (ii) बालाथल (iii) बागोर

⇒ आबू पर्वत पर स्थित राज्य की सबसे ऊंची पर्वत चोटी गुरु शिखर (1722 मी.) या (5650 फीट)
गुरुशिखर को कर्नल जेम्स टॉड ने सन्तो का शिखर कहा है।
⇒ इसे "गुरु माथा" भी कहते है।
⇒ वनस्पति - ढाक, गुलर, हरड़, आम, जामुन, गुग्गल, शीशम, आंवला, नीम, बहेड़ा।

⇒ सिवाना (जालौर एवं बाड़मेर) पर्वतीय क्षेत्र को छप्पन की पहाड़ियां कहते है।
⇒ यही पर नाकोड़ा पर्वत है।
⇒ ग्रेनाइट चट्टानों का बाहुल्य इसीलिए जालौर को ग्रेनाइट नगरी कहा जाता।
नाकोड़ा (मेवानगर) भगवान पार्श्वनाथ का प्रसिद्ध जैन मन्दिर है।

" अरावली पर्वतीय प्रदेश की स्थलाकृति "
① उत्तर पूर्वी पहाड़ी प्रदेश ⇒
जयपुर जिले के उत्तर पूर्व मे स्थित शेखावाटी एवं तोरावाटी की पहाड़ियां जयपुर एवं अलवर की पहाड़ियां शामिल है।
⇒ इस भाग की औसत ऊंचाई 450 मीटर है।

RAJASTHAN CLASSES

इस भाग की प्रमुख चोटीयां ↓
⇒ रघुनाथगढ़ (सीकर 1055 मीटर)
→ खो (जयपुर) 920 मीटर
→ बाबाई (झुन्झुनु) 780 मीटर
⇒ बैराठ (जयपुर) 704 मीटर
⇒ जयगढ़ (जयपुर) 648 मीटर
⇒ नाहरगढ़ (जयपुर) 599 मीटर
⇒ बरवाड़ 788 मीटर एवं मनोहरपुरा 747 मी०

यहां के प्रमुख शिखर ↓
भैराच 792 मीटर, भानगढ़ 649 मी०
सिरावास 651 मीटर अलवर दुर्ग 597 मी०
बिलाली 775 मी० सरिस्का 677 मीटर

② मध्यवर्ती अरावली श्रेणी
जयपुर से राजसमन्द तक विस्तृत भाग। पहाड़ियों की औसत ऊंचाई 700 मीटर है।
प्रमुख चोटीयां - टाड़गढ़ (अजमेर) 933 मीटर तारागढ़ 873 मी० (अजमेर) एवं नागपहाड़ (अजमेर) 795 मीटर है।
⇒ मध्यवर्ती अरावली प्रदेश की औसत ऊंचाई 550 मीटर है।
③ दक्षिणी अरावली प्रदेश - मुख्यत: सिरोही उदयपुर, राजसमन्द डूंगरपुर, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ भागों में विस्तृत पर्वतीय भाग है।
⇒ मोरघा का पठार - 1225 मीटर औसत ऊंचाई
⇒ लासड़िया का पठार - जयसमन्द झील के पास।
⇒ उदयपुर व राजसमन्द क्षेत्र की सर्वोच्च चोटी एवं राज्य की चौथी सर्वोच्च चोटी "जरगा" 1431 मीटर यहीं पर है।

RAJ SEHAN CLASSES

⇒ क्षेत्र की अन्य चोटियां -
कुंभलगढ़ 1224 मीटर (राजसमन्द)
लीलागढ़ (874) नागपानी (867) (राजसमंद)
कमलनाथ की पहाड़ियां (1001) राजसमंद
सज्जनगढ़ (938 मी. उदयपुर),
ऋषभदेव 400 मी. गोगुन्दा 840 मी.
सायरा 900 मी. कोटड़ा 450 मी.

⇒ सिरोही में ऊबड़ खाबड़ कटक पहाड़ियों को भाकर कहा जाता है।
⇒ इसी प्रकार उदयपुर में गिरवा कहा जाता।
⇒ चित्तौड़ का पठारी भाग मेसा का पठार कहलाता है।

आबू पर्वत से घिरा हुआ ⇒ सबसे ऊंचा पठार उड़िया पठार (ऊंचाई 1360 मी.) सबसे ऊंची छोटी गुरुशिखर के नीचे।
राज्य की दूसरी सर्वोच्च छोटी सेर 1597 मी.
दिलवाड़ा (1442) अचलगढ़ (1380)
आबू (1295) ऋषिकेश (1017) धोनिया (1183)

जालौर क्षेत्र की प्रमुख चोटियां
इसराना भाखर 839 मीटर
रोजा भाखर 730 मीटर
झारोला भाखर 588 मीटर है।
⇒ सिवाना की गोलाकार ग्रेनाइट पहाड़ियों को छप्पन की पहाड़ियां एवं नाकोड़ा पर्वत कहते हैं।
⇒ जसवंतपुरा की पहाड़ियों में डोरा पर्वत (869 मी.) प्रमुख चोटी है।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ पूर्वी मैदानी भाग ⇐

⇒ यह मैदानी भाग अरावली पर्वतमाला के पूर्व में स्थित है।

= जिले = जयपुर, भरतपुर, दौसा, सवाईमाधोपुर, धौलपुर, करौली, टोंक, अलवर, अजमेर एवं बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ व डूंगरपुर के कुछ भाग।

⇒ क्षेत्रफल - कुल क्षेत्रफल का 23%

⇒ जनसंख्या - 39% | जनसंख्या घनत्व भी सर्वाधिक

⇒ वर्षा - 50 सेमी से 80 सेमी वार्षिक के मध्य

⇒ जलवायु - आर्द्र जलवायु

⇒ मिट्टी - जलोढ़ एवं दोमट मिट्टी

⇒ छप्पन का मैदान (भाटी मैदान) → बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर का मैदानी भाग

⇒ क्षेत्र में कुओं द्वारा अधिक सिंचाई होती है।

⇒ नहरें - भरतपुर नहर एवं गुड़गांव नहर

⇒ मुख्य विशेषता - चम्बल के बीहड़ व कंदरायें।

⇒ दक्षिणी-पूर्वी सीमा पर विंध्यन पठार व हाड़ौती का पठार स्थित है।

⇒ चम्बल बेसिन का ढाल - दक्षिण से उत्तर की ओर

⇒ बनास बेसिन का ढाल - उत्तर पूर्व की ओर

⇒ माही बेसिन का ढाल पश्चिम में गुजरात की ओर

→ तीनों उपविभागों में विभाजित है।

⇒ इस बेसिन के पश्चिम भाग देवगढ़ के आसपास को पीडमांट का मैदान कहते हैं।

⇒ चम्बल बेसिन में विशाल बिहड़ है।

⇒ अनियमित पहाड़ियों को डांग कहते हैं।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ दक्षिण-पूर्वी पठारी भाग (लावा पठार)
मालवा के पठार का ही एक भाग है।
⇒ जिले - कोटा, बून्दी, बारां, झालावाड़
⇒ करौली, धौलपुर, सवाई माधोपुर के कुछ भाग
बासवाड़ा, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा का कुछ भाग।
विशेषताएं -
⇒ क्षेत्रफल - राज्य का लगभग 7% भाग आता है।
⇒ जनसंख्या - 11% कुल निवास करती है।
⇒ हाड़ौती का पठार एवं लावा का पठार कहते।
⇒ वर्षा - 80 सेमी से 120 सेमी
⇒ राज्य का सर्वाधिक वार्षिक वर्षा वाला क्षेत्र।
⇒ मिट्टी - काली उपजाऊ मिट्टी, जिसका
निर्माण प्रारम्भिक ज्वालामुखी चट्टानों से हुआ।
⇒ जलवायु - अति आर्द्र जलवायु प्रदेश।
⇒ फसलें - कपास, गन्ना, अफीम, तम्बाकू, चावल
धनिया, मेथी, सन्तरा अधिक मात्रा में
⇒ वनस्पति - लम्बी घास, झाड़िया, बांस, खैर
गूलर, सालर, धोक, ढाक, सागवान आदि।
⇒ इसका ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है।
दो भू-भागों में विभाजित है।
(i) विन्ध्यन कगार भूमि = बलुआ पत्थरों से निर्मित
(ii) दक्कन का लावा पठार - बलुआ व स्लेटी पत्थर
⇒ बून्दी व मुकुन्दवाड़ा की पहाड़ियां यहीं पर स्थित।
⇒ उपरमाल का पठार एवं मेवाड़ का पठार स्थित।
⇒ चान्दबाड़ी (झालावाड़) सर्वोच्च ऊंचा
पर्वत शिखर 517 मी. है।
⇒ रामगढ़ (बारां) के निकट विशिष्ट भू-आकृति
"घोड़े की नाल की आकृति" स्थित है।
⇒ चम्बल व सहायक- कालीसिंध, परवन व पार्वती
नदियों द्वारा उपजाऊ मैदान मुख्य विशेषता।

RAJASTHAN CLASSES

राजस्थान के प्रमुख पर्वत, पहाड़ियाँ, व पठार

⇒ गुरुशिखर - माउण्ट आबू में स्थित (सिरोही) राजस्थान की सबसे ऊंची पर्वत चोटी।
कुल ऊंचाई 1722 मीटर है।

⇒ यह हिमालय व पश्चिमी घाट की नीलगिरी के मध्य स्थित सर्वाधिक ऊंची चोटी है।

⇒ कर्नल जेम्स टॉड ने इसे सन्तो का शिखर कहा।

⇒ राज्य की दूसरी सबसे ऊंची चोटी
सेर (सिरोही) 1597 मीटर ऊंची

⇒ दिलवाड़ा (माउंट आबू) राज्य की तीसरी ऊंची चोटी
1442 मीटर ऊंची

⇒ जरगा (उदयपुर) 1431 मीटर ऊंची, राज्य की चौथी सबसे ऊंची चोटी
जो भोरठ के पठार में स्थित है।

⇒ अचलगढ़ (1380) मीटर ऊंची चोटी (सिरोही)

⇒ रघुनाथगढ़ (सीकर) 1055 मीटर ऊंची

⇒ खो (जयपुर) 920 मीटर

⇒ तारागढ़ (अजमेर) 873 मीटर

⇒ मुकुन्दरा की पहाड़ियां - कोटा व झालरापाटन के बीच स्थित इस भू-भाग का ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है।
चम्बल नदी - दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है।

⇒ मालखेत की पहाड़ियां - सीकर जिले में।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ हर्ष की पहाड़ियां - सीकर जिले में स्थित जिस पर जीण माता का मन्दिर है।
⇒ सुण्डा पर्वत - भीनमाल (जालोर) के निकट स्थित पहाड़ियां, सुण्डा माता मन्दिर स्थित
⇒ इस पर 2006 में पहला रोपवे प्रारम्भ किया।

⇒ मालाणी पर्वत श्रृंखला - लूणी बेसिन का मध्यवर्ती घाटी भाग, जालोर व बालोतरा का मध्य भाग
मालाणी पर्वत श्रृंखला के नाम से पुकारते हैं।

⇒ मेसा का पठार - 620 मीटर ऊंचा पठार चित्तौड़गढ़ दुर्ग स्थित है।
⇒ उड़िया पठार - राज्य का सबसे ऊंचा पठार यह आबू पर्वत से 160 मीटर ऊंचा है।
⇒ आबू पर्वत - दूसरा सबसे बड़ा पठार (उड़िया के बाद) औसत ऊंचाई 1200 मीटर सिरोही जिले में स्थित है।
यही पर प्रसिद्ध चट्टाने टॉड रॉक एवं नन रॉक है।

⇒ भोरठ का पठार ⇒ गोगुन्दा व कुंभलगढ़ के बीच स्थित
उदयपुर के उत्तर-पश्चिम में।
इसकी औसत ऊंचाई - 1225 मीटर है।
जरगा पर्वत भी इसी में है।

- भाकर = ऊबड़ खाबड़ कटक पहाड़ियों को स्थानीय भाषा में भाकर कहा जाता है।
- पूर्वी सिरोही क्षेत्र -

RAJASTHAN CLASSES

⇒ अन्य प्रमुख चोटीयां ⇒
कुंभलगढ़ (राजसमन्द में) 1224 मीटर
कमलनाथ की पहाड़ी (राजसंमद) 1001 मीटर
हृषिकेश की पहाड़ी (सिरोही) 1017 मीटर
सज्जनगढ़ (उदयपुर) 938 मीटर
लीलागढ़ (राजसमन्द) 874 मीटर
रघुनाथगढ़ (सीकर) 1055 मीटर

⇒ गिरवा - उदयपुर में तश्तरीनुमा आकृति वाले पहाड़ो की मेखला को स्थानीय भाषा मे गिरवा।
⇒ मेरवाड़ा की पहाड़ियां - टाडगढ़ के समीप
⇒ छप्पन की पहाड़ियां एवं नाकोड़ा पर्वत ↓ बाड़मेर मे सिवाणा क्षेत्र में स्थित गोलाकार पहाड़िया

⇒ लासड़िया का पठार - उदयपुर में जयसंमद से आगे
⇒ त्रिकूट पहाड़ी - जैसलमेर किला स्थित
⇒ उपरमाल - भैसरोडगढ़ (चित्तौड़) से भीलवाड़ा के बिजोलिया तक का पठारी भाग।

⇒ चिड़ियाटूंक पहाड़ी - मेहरानगढ़ दुर्ग स्थित
⇒ तारागढ़ - (अजमेर) नागपहाड़ (अजमेर)
⇒ आडावाला पर्वत - बूंदी में पहाड़ियो का नाम
⇒ भैराच एवं उदयनाथ - अलवर में स्थित
⇒ मगरा - उदयपुर का उत्तर-पश्चिमी भाग
⇒ खो - जयपुर में स्थित पहाड़िया
⇒ बावाई - झुन्झुनु में स्थित पहाड़िया
⇒ डोरा पर्वत - 869 मीटर, रोजाभाखर (730) मीटर इसराना भाखर 839 मी. छारोला पहाड़ = जसवन्तपुरा पर्वतीय क्षेत्र जालौर की पर्वत चोटिया

RAJASTHAN CLASSES

प्रमुख नाल एवं दर्रे

मेवाड़ की प्रमुख नालें - (i) जीलवा की नाल
(ii) सोमेश्वर की नाल - देसुरी से कुछ दूर
(iii) हाथी गुड़ा की नाल - देसुरी से 5 मील दूर
कुंभलगढ़ का किला इसी नाल के निकट है।

धावर तहसील में अरावली के 4 दर्रे हैं।
(i) बर का दर्रा (ii) परवेरिया का दर्रा
(iii) शिवपुर घाट का दर्रा (iv) सूरा घाट दर्रा

⇒ धोरे - रेगिस्तान में रेत के बड़े-2 टीले।
⇒ बरखान - रेत के अर्द्धचन्द्राकार बड़े-2 टीले
⇒ लघु मरुस्थल - महान थार मरुस्थल का पूर्वी भाग जो कच्छ से बीकानेर तक फैला है।

⇒ लूनी बेसिन - लूनी नदी का प्रवाह क्षेत्र।
⇒ खड़ीन - प्लाया झीलें, निम्न कगारों से घिरी
⇒ धरियन - स्थानान्तरित बालूका स्तूपों को।
⇒ बागड़ - यह क्षेत्र झुन्झुनु, सीकर, नागौर का
⇒ वागड़ (वाग्वर) बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर
⇒ हल्दीघाटी के मैदान - बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़
माही बेसिन में 56 ग्राम समूहों का क्षेत्र (56 नदी नाले)
⇒ विन्ध्याचल पर्वत - दक्षिण पूर्व में स्थित मध्यप्रदेश में
⇒ पीडमान्ट मैदान - अरावली श्रेणी में देवगढ़ के समीप पृथक निर्जन पहाड़ियां।
⇒ कूबड़ पट्टी - नागौर व अजमेर जिले का भाग
⇒ ढाढ़ या थली - वायु की रगड़ से बने गर्त को
⇒ मैरा - हनुमानगढ़ में हल्के पीले रंग की मिट्टी
⇒ उसी घोरी गांव - देश का पहला नियोजित रूप से बसा हुआ गांव (हनुमानगढ़ में)

RAJASTHAN CLASSES

॥ राजस्थान की प्रमुख नदियां ॥

⇒ बंगाल की खाड़ी मे जल ले जाने वाली मुख्य नदियां ⇒

⇒ द्रिक - बेबच बाग पाप को खाओ।
बे - बेड़च, ब - बनास, च - चम्बल
बा - बाणगंगा ग - गम्भीरी, पा - पार्वती
प - परवन को - कालीसिन्ध
खा - खारी, ओ - आहु नदी।

⇒ चम्बल नदी = दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र की नदी
→ अन्य नाम - चर्मण्वती, कामधेनु
→ उद्गम - इन्दौर जिला (मध्यप्रदेश) के निकट विन्ध्याचल पर्वत की जानापाव पहाड़ी।
→ बहाव क्षेत्र - मध्यप्रदेश में 320 किमी एवं चौरासीगढ़ (चित्तौड़) के निकट राज्य में प्रवेश। दक्षिणी पूर्वी राजस्थान - जैसे - चित्तौड़गढ़, कोटा बून्दी, सवाईमाधोपुर, करौली, धौलपुर से बहती हुई इटावा (उ. प्र.) के निकट यमुना में प्रवेश।

→ चम्बल नदी यमुना की मुख्य सहायक नदी है।
→ चम्बल 3 राज्य मे बहती है - राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश
→ राजस्थान की बारहमासी नदी है।
→ जिसकी कुल लम्बाई 1051 किमी है।
→ राजस्थान में यह केवल 322 किमी बहती है।
⇒ सर्वाधिक बीहड़ इसी नदी क्षेत्र मे है।
⇒ सतही जल सर्वाधिक मात्रा में इस नदी में उपलब्ध है।
⇒ इस नदी पर गैसरोडगढ़ के निकट चूलिया प्रपात है। यहां चम्बल लगभग 60 फीट ऊंचाई से गिरती है।
⇒ प्रा. शि. बोर्ड आकड़े के अनुसार कुल लम्बाई - 965.66 किमी
राजस्थान - मे 153 कि.मी.

RAJASTHAN CLASSES

⇒ सर्वाधिक बांध इसी नदी पर बने हुए है।
(i) गान्धी सागर (ii) राणा प्रताप सागर
(iii) जवाहर सागर बांध (iv) कोटा बैराज
⇒ विश्व की एकमात्र नदी जिसके 100 किमी. के दायरे में तीन बांध बनाए गए।
⇒ राज्य में सर्वाधिक अवनलिका अपरदन-चम्बल से।
⇒ एलीनिया सिंचाई परियोजना-चम्बल के किनारे।
⇒ सावन भादो परियोजना (कोटा) चम्बल पर स्थित।

सहायक नदियाँ ⇒
द्रिक = काकु आबा में पाप ब।
का- काली सिन्ध कु- कुराल, आ- आलनिया।
बा- बामनी मे- मेज पा- पार्वती
प- परवन ब- बनास

- बनास नदी - (वशिष्टी, वर्णाशा)
वन की आशा के रूप मे जानी जाती है।
⇒ उद्गम - राजसमंद के कुम्भलगढ़ के निकट खमनौर की पहाड़ियां।
⇒ राजसमन्द, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, अजमेर टोंक, सवाई माधोपुर की खण्डार तह. के रामेश्वर धाम एवं पदरा गांव के निकट चम्बल नदी में मिल जाती है।
⇒ पूर्वत राजस्थान में बहने वाली सबसे लम्बी नदी जिसकी लम्बाई 512 किमी है। (लम्बाई 480 कि मी ?) आंकड़ा भी ध्यान मे रखे।
⇒ यह पूर्वत बरसाती नदी है।
⇒ राज्य में जलग्रहण क्षेत्र सर्वाधिक है।
⇒ बीसलपुर बांध (टोंक) इसी नदी पर है।
⇒ बीगोद व मांडलगढ़ के बीच (भीलवाड़ा) में त्रिवेणी संगम - बनास, बेड़च, मेनाल
तीनो नदिया एक साथ मिलना त्रिवेणी संगम कहलाता

RAJASTHAN CLASSES

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

RAJASTHAN CLASSES

→ बनास की सहायक नदियां
ट्रिक - खाडा में मेढीक मोको सोबे।
खा - खारी. डा - डाई. मे - मेनाल, ढी - ढील
मो - मोरेल, को - कोठारी, सो - सोहादरा
बे - बेड़च

- बेड़च नदी -
→ उद्गम - उदयपुर की गोगुन्दा पहाड़ियों से उदयपुर एवं चित्तौड़गढ़ में बहती हुई भीलवाड़ा के मांडलगढ़ तह. में बीगोद में बनास में मिलती है।
= वही मेनाल भी मिलती है।
इनका संगम स्थल - मांडलगढ़ (बनास-बेड़च-मेनाल)
= प्रारम्भ में इसे आयड़ नदी के नाम से एवं उदयसागर झील के बाद इसे बेड़च कहा जाता है।
→ चित्तौड़गढ़ के अपावास के निकट बोसुण्डा बांध बना है।
→ सहायक - गंभीरी, गुजरी, ओराई, वागन नदियां।
→ इस नदी के किनारे आहड़ सभ्यता विकसित हुई।
→ इसकी कुल लम्बाई 157 किमी है।

- बाणगंगा नदी -
→ उद्गम - जयपुर की बैराठ की पहाड़ियां
→ कुल लम्बाई - 240 किमी. (कुछ आकड़े - 330 किमी)
→ बहाव क्षेत्र - जयपुर दौसा, भरतपुर से उत्तरप्रदेश के फतेहाबाद से यमुना में मिल जाती है।
→ सहायक नदियां - गुमटी नाला, सूरी नदी, पलोसन

गम्भीरी नदी
→ उद्गम - जावद गांव मध्यप्रदेश
→ मुख्यतः चित्तौड़गढ़ में बहती है बेड़च की सहायक है।

RAJASTHAN CLASSES

= पार्वती नदी -

- मध्यप्रदेश में विंध्यपर्वत श्रेणी में सोहरे क्षेत्र से निकलकर बारां में करयाहाट के छतरपुरा गांव में प्रवेश करती है।
- बारां व कोटा में बहकर सवाईमाधोपुर की सीमा पर पाली गांव में चम्बल से मिल जाती है।
- सहायक - लासी, बरनी, वेधली, अन्धेरी, रेतडी डूबराज, विलास नदियां।

(काली सिन्ध नदी)

- देवास (मध्यप्रदेश) से निकलकर झालावाड़ के रायपुर के बिन्दा गांव में प्रवेश करती है।
- झालावाड़, कोटा व बारां में बहकर चम्बल में प्रवेश
- राजस्थान में कुल लम्बाई - 145 किमी.
- सहायक - आहू, परवन, आमझर, चौली, उजाड़।

(परवन नदी)

- मध्यप्रदेश से निकलकर झालावाड़ में खारीबोर गांव के निकट प्रवेश कर झालावाड़, कोटा बारां में बहकर कालीसिंध में मिल जाती है।
- शेरगढ़ अभ्यारण्य (बारां) इसी नदी के समीप।
- सहायक नदियां - नेवज, धार, छापी नदियां।

→ खारी नदी ←

- राजसमन्द की बिजराल ग्राम की पहाड़ियों से उद्गम
- बहाव - राजसमन्द, भीलवाड़ा, अजमेर, टोंक में बहकर देवली के निकट बनास में मिलती है।
- सहायक नदी - केवल मांसी

RAJASTHAN CLASSES

⇒ आहू नदी ⇐

= उद्गम - सुसनेर (मध्यप्रदेश) से झालावाड़ में नदपुर के समीप प्रवेश करती है।

⇒ कोटा व झालावाड़ में बहकर गागरोन में कालीसिंध से मिल जाती है।

⇒ गागरोन का किला आहू व कालीसिंध के संगम पर बना हुआ है।

⇒ अरब सागर में जल ले जाने वाली नदियाँ

ट्रिक से - मालू साप! सोजा
मा - माही, लू - लूणी, सा - साबरमती
प - पश्चिम बनास, सो - सोम, जा - जाखम।

⇒ लूणी नदी = उत्तरी व पश्चिमी भाग में बहाव
उद्गम - अजमेर की नागपहाड़ियाँ

⇒ बहाव क्षेत्र = अजमेर, पश्चिमी राज० जैसे नागौर, पाली, जोधपुर, बाड़मेर व जालौर में बहकर गुजरात के कच्छ के रन में विलुप्त हो जाती।

⇒ कुल लम्बाई 495 कि०मी० पूर्णतया बरसाती है।

⇒ उद्गम स्थल पर सागरमती कहा जाता है।

⇒ पुष्कर से आने वाली सरस्वती नदी मिलने के बाद में लूणी कहते है।

⇒ इसका जल बालोतरा तक मीठा व बाद में खारा

⇒ राज्य के सम्पूर्ण अपवाह क्षेत्र का लगभग 10.4% भाग लूनी नदी बेसिन का है।

⇒ मरुस्थल की गंगा, पश्चिमी राज० की सबसे लम्बी नदी

⇒ इसका प्रवाह क्षेत्र गोड़वाड़ क्षेत्र कहलाता है।

⇒ सबसे प्राचीन नाम - लवणवती।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ लूणी नदी की कुल लम्बाई 495 है राजस्थान में 330 कि.मी. है बाकि गुजरात में।
⇒ सरदार समंद परियोजना लूनी नदी पर है
⇒ लूणी की सहायक नदियाँ
ट्रिक से पढ़े तो -
सुकी बाडी खारी जो जवाई से मिलती
⇒ सुकी- सुकडी, बाडी-बाडी
खारी - खारी जो - जोजडी
जवाई- जवाई से - सागी
मि - मीठडी ल - लीलडी, गी - गुहिया
कुछ आंकड़े के अनुसार राज में इसकी लम्बाई 350 कि.मी. है।

= माही नदी (दक्षिण राजस्थान)
⇒ उद्गम - विंध्याचल पहाड़ियो से महद झील (मध्यप्रदेश)
⇒ बहाव क्षेत्र - बांसवाड़ा व डुंगरपुर मे
पंचमहल, गुजरात मे प्रवेश करती है।
⇒ कड़ाना बांध - यही पर बना हुआ
⇒ इसके प्रवाह क्षेत्र को छप्पन का मैदान कहते है।
⇒ तीन राज्यों मे बहती मध्यप्रदेश, राज०, गुजरात
⇒ इसकी कुल लम्बाई 576 किमी (राज० में 194 किमी)
⇒ वागड़ व कांठल की गंगा कहा जाता है।
⇒ दक्षिणी राजस्थान की स्वर्ण रेखा कहा जाता है।
⇒ यह नदी कर्क रेखा को दो बार पार करती।
⇒ माही बजाज सागर - बोरखेड़ा (बांसवाड़ा)
⇒ सहायक नदियां ट्रिक से ↓
⇒ भाई अन्ना चारपाई मेह सोजा
भा - भादर, ई - इरु, अन्ना - अन्नास
चारपाई - चाप, मे - मोरेन, ह - हरण
सो - सोम, जा - जाखम

RAJASTHAN CLASSES

सोम नदी - (दक्षिणी राजस्थान)

⇒ उद्गम - ऋषभदेव (उदयपुर) के निकट बीछामेड़ा की पहाड़ियां है।
⇒ उदयपुर व डूंगरपुर में बहकर सीमा बनाती है।
⇒ बेणेश्वर स्थान पर माही में मिलन
⇒ सहायक जाखम, टीडी, गोमती, सारनी

जाखम नदी (दक्षिणी राजस्थान)

⇒ उद्गम - छोटी सादड़ी (बांसवाड़ा) के निकट की पहाड़ियों से निकलती है।
⇒ बहाव - प्रतापगढ़, उदयपुर व डूंगरपुर
⇒ बेणेश्वर (डूंगरपुर) के पास सोम नदी में प्रवेश
⇒ सहायक नदियां - करमाई, सूकली।
⇒ माही, सोम, जाखम त्रिवेणी संगम (बेणेश्वर)

पश्चिमी बनास (दक्षिणी पश्चिमी)

⇒ उद्गम - नया सानवारा (सिरोही) अरावली की पहाड़ियां
⇒ सिरोही में बहकर गुजरात के बनासकांठा में प्रवेश।
⇒ गुजरात का डीसा नगर इसी पर स्थित है।
⇒ सहायक नदियां - सूकली, धारवेल, कूकड़ी

साबरमती नदी (दक्षिणी पश्चिमी)

⇒ उद्गम - कोटड़ा की पहाड़ियों से (उदयपुर)
⇒ गुजरात में बहकर खम्भात की खाड़ी में गिरती है।
⇒ गान्धीनगर इसी नदी पर स्थित है।
⇒ सहायक नदियां -
ट्रिक - (वैसे हमें भावा चाहिए)
वै - वैतेरक, से - सेई, ह - हथिमति
मे - मेश्वा, मा - माजम, वा - वाकल
चाहिए - साइलेट
⇒ कुल लम्बाई 416 किमी. (राजस्थान में 45 किमी.)

RAJASTHAN CLASSES

⇒ अन्य प्रमुख नदियां :-

⇒ लूणी की सहायक नदियां
सुकी बाड़ी खारी जो जवाई से मिलीगी।
⇒ सुकड़ी - उद्गम- पाली जिला
- प्रवाह- पाली, जालौर, बाड़मेर
- समदड़ी (बाड़मेर) में लूणी से मिल जाती है।
⇒ बॉकली (जालौर) मे बाकली बांध

⇒ बांडी - (हेमावास) उद्गम - पाली से
⇒ प्रवाह- पाली में बहकर लाखर गांव मे लूणी में
⇒ सहायक नदियां- गुहिया।

⇒ खारी - शेरगांव की पहाड़ियां (सिरोही)
प्रवाह- सिरोही - जालौर
⇒ सायला में (जालौर) मे जवाई में मिल जाती है।

⇒ जोजड़ी - उद्गम- पोडलू की पहाड़िया (नागौर)
⇒ प्रवाह- नागौर, जोधपुर
⇒ दायी ओर से मिलने वाली एकमात्र लूणी की सहायक
⇒ लूणी की अन्य सभी नदियों का उद्गम
अरावली की पहाड़ियो से है।

⇒ जवाई - उद्गम- गोरियां गांव की पहाड़िया (पाली)
बहाव क्षेत्र - पाली व जालौर
⇒ सायला के पास इसमें खारी मिल जाती है।
⇒ बाड़मेर में यह लूणी में मिल जाती है।
⇒ सुमेरपुर (पाली) के निकट जवाई बांध बना है।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ अन्त प्रवाह की नदियाँ

⇒ घग्घर - उद्गम - शिवालिक की पहाड़िया शिमला (हिमालय से)

⇒ टिब्बी तह. तलवाड़ा गांव (हनुमानगढ़) में प्रवेश

⇒ हनुमानगढ़ में बहती हुई भटनेर के पास विलुप्त

⇒ वर्षा ऋतु में सूरतगढ़ व अनूपगढ़ तक (गंगानगर)

⇒ यह वैदिक नदी सरस्वती के पेटे में बहती है।

⇒ यह मृत नदी के नाम से भी जानी जाती है।

* कांतली नदी - उद्गम सीकर की खंडेला पहाड़ियां बहाव क्षेत्र तोरावाटी कहलाता है।

⇒ बहाव क्षेत्र - सीकर, झुन्झुनु, चुरु तक

⇒ काकनी या काकनेय - कोटारी गांव (जैसलमेर)

⇒ अधिक पानी आने के कारण घुस झील में गिरती

⇒ स्थानीय भाषा में मसूरदी नदी भी कहा जाता है।

⇒ रूपारेल नदी - (वाराह नदी)
उद्गम - थानागाजी रिजर्व फोरेस्ट की उदयनाथ की पहाड़ी से निकलकर (अलवर)

⇒ अलवर व भरतपुर में बहाव (एवं विलुप्त)

═══xxx═══

⇒ वाकल - उद्गम - उदयपुर में गोगुन्दा की पहाड़ी
प्रवाह - उदयपुर में बहाव
साबरमती की सहायक नदी।

⇒ सेई नदी - उदयपुर की पादराना पहाड़ियों से। गुजरात में साबरमती से मिल जाती है।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ अनास नदी - उद्गम - विंध्याचल की पहाड़ियां
⇒ मेलिडिजेड बासवाड़ा में प्रवेश (राजसमंद)
डुंगरपुर गालियाकोट के निकट माही में प्रवेश

= मोरेन नदी - डुंगरपुर की पहाड़ियों से निकलकर गलियाकोट के निकट माही में मिलती।

⇒ कुनु (कुनोर) नदी - (गुना) मध्यप्रदेश उद्गम।
मुसरी गांव (बारां) में प्रवेश
करौली में चम्बल में प्रवेश।

⇒ कुराल - उद्गम - उपरमाल के पठार से
बून्दी में बहकर चम्बल में प्रवेश।

⇒ नेवज - (नीमाज) - विंध्याचल पर्वत से निकलकर झालावाड़ के कोलुखेड़ी के निकट प्रवेश
बारां व झालावाड़ के निकट परवन में मिलती है।

⇒ मेज नदी - भीलवाड़ा की मांडलगढ़ तह. से
बून्दी में बहती हुई चम्बल में मिलती है।

⇒ आलनिया - कोटा में मुकुन्दरा की पहाड़ियां
नोटाना गांव में चम्बल में मिल जाती है।
⇒ चाकण - बून्दी जिले से उद्गम
⇒ बून्दी के नेनवा तह. में चाकण बांध बना है।
⇒ कानपुरा गांव (स. मा.) में चम्बल में प्रवेश।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ छोटी कालीसिंध - मागसी (झालावाड़) में मेकरिया गांव (झालावाड़) चम्बल में मिलती है।

⇒ बामनी - हरिपुरा (चित्तौड़गढ़) की पहाड़ियो से निकलकर भैंसरोड़गढ़ के निकट चम्बल में प्रवेश

⇒ कोठारी - उद्गम - डिबर (राजसमंद) बहाव क्षेत्र - राजसमंद व भीलवाड़ा नन्दराय (भीलवाड़ा) बनास में प्रवेश।

⇒ मान्सी - भीलवाड़ा से निकलकर अजमेर में खारी में मिल जाती है।

⇒ माशी - किशनगढ़ (अजमेर) की पहाड़ियो से अजमेर व टोंक में बहकर बनास में प्रवेश

⇒ मोरेल - बस्सी के चैनपुरा गांव की पहाड़ियों से दौसा व सवाईमाधोपुर में बहाव क्षेत्र करौली के हाड़ौती गांव में बनास में मिल जाती। ढूंढ इसकी सहायक नदी है जो जयपुर में बहती। मोरेल बांध (पीलूखेड़) सवाईमाधोपुर में बना हुआ।

⇒ कालीसिल - सपोटरा तह (करौली) की पहाड़ियो से हाड़ौती के निकट बनास में मिलती है।

⇒ डाई नदी - अरावली की पहाड़ियो (अजमेर) से अजमेर व टोंक में बहाव। बीसलपुर के पास बनास में मिल जाती है।

⇒ सोहादरा - अजमेर से निकलकर माशी में मिलती।

⇒ ढील नदी - बावली गांव (टोंक) से निकलकर सवाई माधोपुर के पास बनास में मिलती है।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ साबी नदी - सेवर जयपुर की पहाड़ियों से अलवर में बहती हुई हरियाणा की ओर।
⇒ साबी नदी वर्षा ऋतु में अपनी विनाशलीला के लिए प्रसिद्ध थी। (आन्तरिक प्रवाह)

मेन्था - मनोहरपुरा जयपुर से निकलकर नागौर से होती हुई सांभर में गिरती है। (आन्तरिक प्रवाह)

⇒ रूपनगढ़ - अजमेर के नागपहाड़ से (आन्तरिक प्रवाह) निकलकर सांभर झील में मिल जाती है।

⇒ गम्भीर नदी - उद्गम - करौली
⇒ करौली, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, धौलपुर से उत्तरप्रदेश में यमुना में मिल जाती है।

⇒ पार्वती - छावर गांव (करौली) की पहाड़ियों से धौलपुर में गम्भीर से मिल जाती है। पार्वती बांध बना हुआ है (अंगाई गांव-धौलपुर)

इस आकड़े को भी ध्यान में रखे ↓
बनास - 480 किमी. माही - 576 किमी.
लूनी - 350 किमी., बाणगंगा 380 किमी.
चम्बल - 965/966 किमी राज० में - 153

⇒ चूरू एवं बीकानेर जिलो में एक भी नदी नही बहती।

RAJASTHAN CLASSES

नदियाँ Trick से एवं MAP से पढ़ेंगे ॥

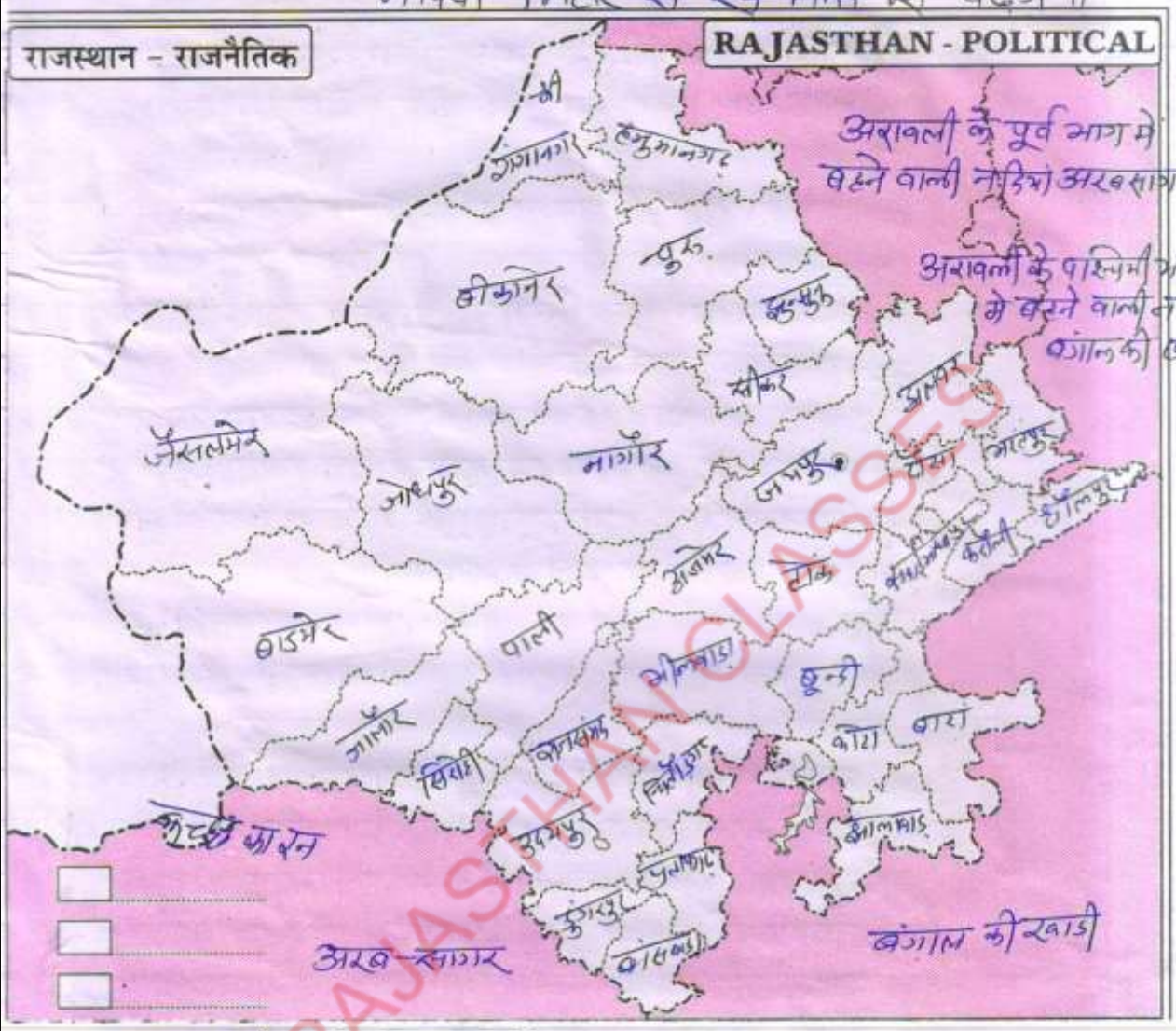

राज्य की नदियों का क्षेत्रवार अध्ययन ⇒

(i) उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान - लूणी, जवाई, खारी, सूकड़ी बांडी, सागी, जोजड़ी, घग्घर, कांतली, काकनी (मसूरदी)

(ii) दक्षिणी-पश्चिमी राजस्थान - पश्चिमी बनास, साबरमती बाकल, व सेई नदी।

(iii) दक्षिणी राजस्थान - माही सोम, जाखम, अनास, मोरेन

(iv) दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान → चम्बल, कुनु, पार्वती कालीसिंध, कुराल, आहू, नेवज, परवन, मेज, आलनिया चाकण, बामनी, बनास, बेड़च, गम्भीरी, कोठारी, खारी, माशी मोरेल, कालीसिल, डाई, सोहादरा, छील, छोटी कालीसिंध।

RAJASTHAN CLASSES

(v) पूर्वी राजस्थान = साबी, मेन्था, रूपनगढ़
बाणगंगा, रूपारेल, गम्भीर, पार्वती।

कुछ महत्वपूर्ण संगम एवं दुर्ग

(i) गागरोन का किला - आहू व कालीसिंध संगम पर
(ii) भैंसरोड़गढ़ दुर्ग (चित्तौड़गढ़)
चम्बल व बामनी के संगम पर
(iii) शेरगढ़ कोशवर्द्धन दुर्ग - परवन नदी के किनारे
(iv) चित्तौड़गढ़ दुर्ग - गम्भीरी व बेड़च के संगम पर
(v) मनोहरथाना दुर्ग (झालावाड़)
परवन व कालीखाड़ संगम पर
(vi) गढ़ पैलेस (कोटा) चम्बल के किनारे।

⇒ नदियों के निकट अभ्यारण्य ↓
(i) राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभ्यारण्य - चम्बल नदी
(ii) जवाहर सागर अभ्यारण्य - चम्बल नदी पर
(iii) शेरगढ़ अभ्यारण्य (बारां) परवन नदी
(iv) बरसी अभ्यारण्य (चित्तौड़गढ़) ओरई - बामनी संगम
(v) भैंसरोड़गढ़ अभ्यारण्य - चित्तौड़गढ़
चम्बल व बामनी का संगम।

RAJASTHAN CLASSES

= कुछ महत्वपूर्ण तथ्य एवं बिन्दु =

⇒ राज्य में पूर्णतः बहने वाली सबसे लम्बी एवं सर्वाधिक जलग्रहण क्षेत्र वाली -बनास नदी।

⇒ राज्य की सबसे लम्बी नदी व सर्वाधिक सतही जल वाली नदी = चम्बल

⇒ सर्वाधिक बांध चम्बल पर बने हुए है।

⇒ (i) राणाप्रताप सागर (ii) कोटा बैराज (iii) गान्धी सागर (iv) राणा प्रताप सागर

⇒ चम्बल नदी पर भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) के निकट चूलिया जलप्रपात

⇒ मांगली नदी बून्दी में प्रसिद्ध भीमलत प्रपात

⇒ सर्वाधिक जिलों में बहने वाली नदियाँ -चम्बल, बनास व लूणी (प्रत्येक 6 जिले)

⇒ सर्वाधिक अन्तर्राज्यीय सीमा (राज. एवं मध्यप्रदेश) राज्य की एकमात्र चम्बल नदी है।

⇒ सोम नदी के किनारे डूंगरपुर में देव - सोमनाथ मन्दिर स्थित है।

⇒ नदियों के त्रिवेणी संगम -

(i) बनास - बेड़च - मेनाल = मेनाल (भीलवाड़ा)

(ii) माही - सोम - जाखम - बेणेश्वर (डूंगरपुर)

(iii) चम्बल सीप बनास - रामेश्वरधाट (सवाईमाधोपुर)

(iv) बनास खारी डाई - टोडारायसिंह (टोंक)

RAJASTHAN CLASSES

॥ राजस्थान की प्रमुख झीलें ॥

⇒ राजस्थान में दो प्रकार की झीलें पाई जाती है।
(i) खारे पानी की झीलें (ii) मीठे पानी की झीलें।

⇒ खारे पानी की झीलें - उत्तर-पश्चिमी मरुस्थलीय भाग।
⇒ मीठे पानी की झीलें - अरावली के पूर्वी भाग में।

। खारें पानी की झीलें ।

ट्रिक - साडी का पल्लू कुता फाड़ रे।
- सा - साम्भर, डी - डीडवाना, का - कावोद
प - पचपदरा, लू - लूणकरणसर
फा - फलौदी, डे - डेगाना, रे - रेवासा

⇒ ① साम्भर झील - जयपुर जिले में स्थित भारत की दूसरी सबसे बड़ी झील (चिल्का के बाद) खारे पानी की झील है।
⇒ भारत के कुल नमक उत्पादन का 8.7% यही से उत्पादित होता है।
⇒ इसका अपवाह क्षेत्र 500 वर्ग किमी. है।
⇒ यहां उत्तम किस्म का नमक उत्पादन होता है।
⇒ यह झील तीन जिलो की सीमा बनाती है।
जयपुर, अजमेर, नागौर।
⇒ यह झील समुद्र तल से 1200 फीट ऊंचाई पर
⇒ इसमें चार नदियां - रूपनगढ़, मेथा, खारी, खंडेला

⇒ अन्तर्राष्ट्रीय विरासत घोषित झील
अधिकतम लम्बाई - 32 कि.मी.
चौड़ाई - 3 से 12 किमी. है।
⇒ HCL (हिन्दुस्तान साल्ट लिमि.) एवं साम्भर साल्ट लिमि.
भारत सरकार का उपक्रम।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ डीडवाना - नागौर में स्थित है।
⇒ पचपदरा - बालोतरा (बाड़मेर) में स्थित उत्तम श्रेणी का नमक उत्पादन।
इस झील में खारवाल जाति के लोग मोरली झाड़ी के प्रयोग द्वारा नमक का स्फटिक करते है।
⇒ लूणकरणसर - लूणकरणसर कस्बा (बीकानेर) में यहाँ से कम मात्रा में नमक उत्पादन होता है।
⇒ कावोद - जैसलमेर में स्थित झील
⇒ डेगाना - नागौर में स्थित झील
⇒ कुचामन - नागौर में स्थित झील
⇒ तालछापर - चुरू में स्थित झील
⇒ रेवासा - सीकर में स्थित झील

- मीठे पानी की प्रमुख झीलें -
दिक तो बनली है ⇒
⇒ उदयराज नक्की पीकर फतेहबा को फासि पर्ल आना
उदय - उदयसागर, राज - राजसमंद, नक्की - नक्की पी - पिछोला, कर - पुष्कर, फतेह - फतेहसागर, बा - बालसमंद को - कोलायत, फा - फाँयसागर, सि - सिलीसेढ़, आना - आनासागर।
⇒ जयसमन्द - (उदयपुर) सन 1687-1691 की अवधि में उदयपुर के महाराणा जयसिंह द्वारा निर्माण गोमती नदी पर बांध।
⇒ ताजे मीठे पानी की एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम झील
⇒ इस झील में 7 बड़े टापू है जिसमें भील व मीणा जनजाति के लोग काम करते है।
⇒ "बाबा का भांगड़ा" झील में स्थित सबसे बड़ा टापू।
⇒ एक और टापू का नाम "प्यारी" है।
⇒ इसे देबर झील भी कहा जाता है।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ राजसमन्द झील - 1622 ई. में महाराणा राजसिंह द्वारा निर्मित

⇒ कांकरोली (राजसमंद) के निकट स्थित इस झील में गोमती नदी गिरती है।

नौचौकी पाल - यह चौकी उत्तरी पाल, जहां 25 शिलालेखों पर "राजसिंह प्रशस्ति" उत्कीर्ण है। जिसमें मेवाड़ का इतिहास संस्कृत भाषा में लिखा है।

⇒ पिछोला झील - राणा लाखा के काल में एक बनजारे द्वारा निर्मित (14वी शताब्दी) उदयपुर के पश्चिम में पिछोला गांव में निर्मित महाराणा उदयसिंह ने इसकी मरम्मत कराई थी इसमें दो टापू बने है। - जिस पर जगमन्दिर व जगनिवास महल है। खुर्रम (शाहजहां) ने विद्रोही दिनो में यही आकर शरण ली थी।

⇒ फतेहसागर - राणा फतेहसिंह द्वारा 1888 में उदयपुर में पुनर्निर्मित। प्रारम्भ में तालाब के रूप में महाराणा जयसिंह ने 1687 में धूर के तालाब के साथ ही बनाया।

⇒ यह नहर द्वारा पिछोला झील से जुड़ी हुई है।

⇒ कनाट बांध - बांध की नींव का पत्थर ड्यूक ऑफ कनॉट द्वारा रखा जाने के कारण नाम।

⇒ यह झील फतहसागर के नाम से।

RAJASTHAN CLASSES

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

RAJASTHAN CLASSES

⇒ उदयसागर झील - महाराणा उदयसिंह द्वारा 1559 से 1564 ई तक की अवधि में बनाई गई। आयड़ नदी इसमें गिरती है। तथा इसके बाद इसका नाम बेडच हो जाता है।

⇒ नक्की झील - माउन्ट आबू (सिरोही) में रघुनाथजी के मन्दिर के पास स्थित। राज्य की सबसे ऊंची झील। टॉड रॉक एवं नन रॉक यहां स्थित विशाल चट्टाने। आख्यानों के अनुसार इसका निर्माण देवताओं द्वारा अपने नाखूनों से खोदकर किया था।

⇒ आनासागर - अजमेर में स्थित झील। पृथ्वीराज चौहान के दादा अर्णोराज द्वारा 1137 में निर्मित झील।
- झील के किनारे सम्राट जहांगीर ने "सुभाष उद्यान" (दौलत बाग) तथा शाहजहां ने संगमरमर की बारहदरी का निर्माण करवाया। इसमें बांडी नदी का पानी आता है।

⇒ फॉयसागर - अजमेर में स्थित झील का निर्माण अंग्रेज इंजीनियर फॉय के निर्देशन में अकाल राहत परियोजना के तहत बांडी नदी का पानी रोककर बनाई गई, इसका पानी आनासागर में जाता है।

⇒ पुष्कर झील - अजमेर से 11 किमी दूर पुष्कर में स्थित पवित्र झील। जहां हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता है। हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल। ब्रह्मा मन्दिर स्थित।
⇒ मीठे पानी की सबसे बड़ी प्राकृतिक झील है।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ सिलीसेढ़ झील - अलवर जिले में
- अलवर-जयपुर सड़क मार्ग पर स्थित।
- यहां 1845 ई. में अलवर के महाराजा बिनयसिंह ने अपनी रानी हेतु एक शाही महल बनाया
- जो वर्तमान में लेक पैलेस होटल के रूप में।

⇒ कोलायत झील - बीकानेर जिले के कोलायत गांव में स्थित।
जहां कपिल मुनि का आश्रम स्थित है।
यहां प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता है।

⇒ बालसमन्द झील - जोधपुर में स्थित झील निर्माण सन् 1159 में परिहार शासक बालकराव ने करवाया था।

⇒ महत्वपूर्ण तथ्य -
⇒ कांठल - माही नदी के काठे में स्थित प्रतापगढ़ का भू-भाग।
⇒ नाली - हनुमानगढ़ में घग्घर नदी के पाट को।
⇒ लिटिल रन - कच्छ की खाड़ी के मैदान।
⇒ त्रिवेणी - बीगोद व मांडलगढ़ (भीलवाड़ा) बनास, बेड़च और मेनाल का संगम।
⇒ सीसारमा व बुझड़ा नदी - उदयपुर की पिछोला झील को भरने वाली नदियां
⇒ पन्नालाल शाह का तालाब - (खेतड़ी झुन्झुनु)
1870 में सेठ पन्नालाल द्वारा निर्मित, खेतड़ी महाराजा अजीतसिंह के आमंत्रण पर पधारे स्वामी विवेकानन्द यहीं रुके।
⇒ मान सरोवर - सवाईमाधोपुर, जैवसागर - डूंगरपुर
⇒ किशोर सागर - कोटा, गड़सीसर - जैसलमेर, रामगढ़ - जयपुर

RAJASTHAN CLASSES

⇓ राजस्थान की जलवायु ⇓ एवं मृदा ⇓

⇒ राज्य उपोष्ण कटिबंध में स्थित है।
⇒ अरावली पर्वत श्रेणियो के आधार पर राज्य की जलवायु दो भागों में बांटी गई।
(i) पश्चिमी क्षेत्र - अरावली का वृष्टि छाया होने के कारण अत्यल्प वर्षा प्राप्त करता है। यहां शुष्क जलवायु पाई जाती है।
(ii) पूर्वी भाग - यहां प्रायः एकरूपता अपेक्षाकृत अधिक आर्द्रता एवं सामयिक वर्षा। इस प्रकार इस भाग में आर्द्र जलवायु पाई जाती है।

⇒ जलवायु की विशेषताएं ⇒
(i) वर्षा - समस्त वर्षा गर्मियों में (जून, जुलाई, अगस्त) दक्षिणी पश्चिमी मानसूनी हवाओं से होती।
· शीतकाल में बहुत कम वर्षा पश्चिमी राज. में भूमध्य सागर से उत्पन्न पश्चिमी विक्षोभो से होती। जिसे मावठ कहा जाता है।
वर्षा का वार्षिक औसत लगभग 58 से.मी. है।
(ii) वर्षा की मात्रा एवं समय अनिश्चित।
(iii) वर्षा का असमान वितरण - दक्षिणी पूर्वी भाग में अधिक उत्तरी-पश्चिमी भाग मे नगण्य होती है।

⇒ जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक -
(i) राज्य की अक्षांशीय स्थिति (ii) समुद्र से दूरी
(iii) प्रचलित हवाएं (iv) महाद्विपीयता
(v) पर्वतीय अवरोध व ऊंचाई
(vi) समुन्द्र तल से औसत ऊंचाई।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ जलवायु के आधार पर राज्य में ऋतुएं

(i) ग्रीष्म ऋतु - मार्च से मध्य जून तक
(ii) वर्षा ऋतु - मध्य जून से सितम्बर तक
(iii) शीत ऋतु - नवम्बर से फरवरी तक

⇐ मृदा ⇒

(i) रेतीली व बलुई मिट्टी - जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर बीकानेर, नागौर, चुरू, झुन्झुनु (शुष्क प्रदेश)
विशेषताएं - मोटा कण, नमी धारण की निम्न क्षमता
खरीफ की बाजरा, मोठ, मूंग की फसल हेतु उपयुक्त।

(ii) लाल दोमट मिट्टी - उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा एवं चित्तौड़गढ़
विशेषताएं - बारीक कण, नमी धारण की अद्भुत क्षमता।
मक्का की फसल हेतु उपयुक्त।

(iii) काली मिट्टी - कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ (द.पू.भाग)
बारीक कण, नमी की उच्च क्षमता, कपास एवं नकदी उपयुक्त

(iv) मिश्रित लाल काली मिट्टी - उदयपुर, चित्तौड़गढ़ डूंगरपुर, बांसवाड़ा, भीलवाड़ा।
विशेषता - कपास एवं मक्का की फसल हेतु उपयुक्त।

(v) मिश्रित लाल पीली मिट्टी - स.माधोपुर, अजमेर, सिरोही भीलवाड़ा। लौह ऑक्साइड की बहुलता।
नाइट्रोजन कैल्शियम एवं कार्बनिक यौगिकों की अल्पता

(vi) लवणीय मिट्टी - गंगानगर, बीकानेर, बाड़मेर, जालौर
क्षारीय व लवणीय तत्वों के कारण अनुपजाऊ

RAJASTHAN CLASSES

⇒ जलोढ़ एवं कछारी मिट्टी - अलवर, भरतपुर, धौलपुर जयपुर, टोंक, सवाई माधोपुर, कोटा, बून्दी नाइट्रोजन तत्वो की बहुलता। गेहू, चावल, कपास एवं तम्बाकू हेतु उपजाऊ मिट्टी।

⇒ भूरी मिट्टी- भीलवाड़ा, अजमेर, स. माधोपुर, टोंक बनास प्रवाह क्षेत्र की मृदा, कृषि के लिए उपर्युक्त।

⇒ सीरोजम मिट्टी, धूसर मरुस्थलीय मिट्टी - पाली, नागौर, जालौर, रंग-पीला, भूरा उर्वरा शक्ति की कमी, कार्बनिक पदार्थो की कमी।

⇒ पर्वतीय मिट्टी - सिरोही, उदयपुर, पाली, अजमेर, अलवर मिट्टी की गहराई कम के कारण खेती हेतु अनुपयुक्त।

॥ विशेष महत्वपूर्ण बिन्दु ॥

⇒ सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान - माउन्ट आबू
⇒ सर्वाधिक वर्षा वाला जिला - झालावाड़
⇒ सबसे गर्म महीना - जून, सबसे ठंडा महीना - जनवरी।
⇒ न्यूनतम वर्षा वाला स्थान - जैसलमेर
⇒ मिट्टी का सर्वाधिक अपरदन (अवनालिका) चम्बल नदी से होता है।
⇒ राज्य में बीहड़ भूमि का सर्वाधिक विस्तार धौलपुर जिले मे।
⇒ भूरी-दोमट मिट्टी लूनी बेसिन में पाई जाती है।
⇒ मिट्टी का सर्वाधिक अपरदन - दक्षिण एवं पूर्वी जिलो में।
⇒ मरुस्थलीय जिलों में सर्वाधिक मिट्टी अपरदन का मुख्य कारण - वायु है।
⇒ राजस्थान में अरब सागर की मानसूनी हवाओ की प्रवाह की दशा दक्षिण पश्चिम से उत्तरपूर्व की ओर होती है।
→ राजस्थान वार्षिक वर्षा 58 सेमी औसतन होती है।

RAJASTHAN CLASSES

प्रमुख बांध एवं बावड़ियाँ-I

⇒ बीसलपुर बांध परियोजना ⇒
टोंक, अजमेर, जयपुर को जलापूर्ति
राजमहल (टोडारायसिंह) पर संगम स्थल
बनास, डाई एवं खारी नदी।
⇒ राजस्थान का एकमात्र कंकरीट से बना बांध
1988-89 में निर्मित बांध
574 मीटर लम्बा 39.5 मीटर ऊँचा

टोंक जिले के विभिन्न बांध, बावड़ियां
⇒ टोरडी सागर बांध, हाड़ी रानी की बावड़ी
बुद्ध सागर - जहाँ सन्त पीपा की गुफा है

पाली जिला ↓
⇒ जवाई बांध - सुमेरपुर के निकट जवाई
नदी पर स्थित बांध
निर्माण - 13 मई 1946 को जोधपुर महाराजा
उम्मेदसिंह द्वारा इंजीनियर एडगर की देखरेख में।
⇒ मारवाड़ का अमृतसरोवर कहा जाता है।
⇒ उदयपुर की कोटड़ा तह में बने सेई बांध से
पानी जवाई बांध में लाने के लिए पहाड़ में
7 कि.मी. लम्बी सुरंग तैयार कर सर्वप्रथम
7 अगस्त 1977 में पानी डाला गया।
⇒ अन्य बांध - हेमावास बांध, बीठन बांध
बांकली बांध, पादरा बांध

⇒ दूध बावड़ी - माउंट आबू, नौलखा बावड़ी, उदय बावड़ी
त्रिमुखी बावड़ी (डूंगरपुर)

RAJASTHAN CLASSES

⇒ जयपुर में स्थित : रामगढ़ बांध
बाणगंगा नदी पर बनाया गया।
कालोता बांध, छापवाड़ा बांध, गूलर बांध
पाटन टैंक बांध, पन्ना मीणा की बावड़ी।

⇒ मेजा बांध - निर्माण कोठारी नदी पर
मांडलगढ़ में किया गया।
इस बांध पर बनाए गए मेजा पार्क को
ग्रीन माउंट भी कहा जाता है।
⇒ खारी बांध, सेरेरी बांध, अर्मिला बांध
अडवान बांध, उम्मेद सागर बांध
रामसागर बांध [चमना बावड़ी = शाहपुरा में]
बाई राज की बावड़ी, चौखी बावड़ी
भीलवाड़ा में स्थित बावड़ियां एवं बांध ॥

⇒ जाखम बांध - राज्य का सबसे ऊंचा
(8 मीटर) बांध है।
यह बांध जाखम नदी पर स्थित एवं
प्रतापगढ़ जिले में है।

⇒ माही बजाज सागर बांध -
यह राज्य का सबसे लम्बा बांध है।
जिसकी लम्बाई (3109) मीटर है।
माही नदी पर बना बांसवाड़ा में स्थित है।

⇒ चित्तौड़गढ़ - भूपालसागर बांध
ओरई बांध, घोसुण्डा बांध, रूपारेल बांध
राणा प्रताप सागर बांध (चम्बल नदी पर)
राज्य का सर्वाधिक भराव वाला बांध

RAJASTHAN CLASSES

⇒ बारां जिले के बांध ←
उम्मेदसागर, सीताबाड़ी, बिलास बांध
बेनेटी, परवन परियोजना
लपसी व ऑस्लीजी की बावड़ी (शाहबाद में)
⇒ कोटा में स्थित बांध -
जवाहर सागर बांध - एक पिकअप बांध है।
सावन-भादो बांध, आलनिया बांध, कोटा बांध/
या कोटा बैराज, बड़ गांव की बावड़ी

⇒ दौसा ⇒ माधोसागर बांध, रेडियो बांध
चांद बावड़ी आभानेरी - प्रतिहार राजा चन्द्र द्वारा निर्मित
आलुदा का बुबानिया कुण्ड।
⇒ बून्दी - गरदड़ा बांध, गुढ़ा बांध
रानीजी की बावड़ी - अनिरुद्ध की विधवा
रानी नाथावत ने करवाया जिसे बावड़ियो का सिरमौर।
अनारकली की बावड़ी - छत्रपुरा क्षेत्र में

⇒ जोधपुर - उम्मेद सागर, तख्त सागर,
जसवन्त सागर - पिचियाक नदी पर बना बांध 1991 में टूटा।
महिला बाग का झालरा, कातन बावड़ी - ओसियां

= बाटाडू का कुंआ - मरुस्थल का जलमहल (बाड़मेर)
⇒ नारायण सागर बांध - अजमेर का समुद्र
(डिग्गी तालाब, लसाड़िया बांध, मुंडोती)
⇒ पांचना बांध (करौली) सबसे बड़ा मिट्टी का बांध
⇒ मोरेल बांध - सवाई माधोपुर, (पीपलदा, ईसरदा)
⇒ अलवर - जयसमन्द बांध, देवती बांध, मंसा सागर
नीमराणा की बावड़ी - टोडरमल द्वारा नौ मंजिला
⇒ भरतपुर - सीकरी बांध, अजान, सेवर बांध
बन्ध बारेठा बांध - बनावट - जहाज जैसी।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ राज्य के वन एवं वन्य जीव ⇐

राज्य में वनों के प्रकार -

⇒ शुष्क सागवान वन -
75 से 110 से.मी. वार्षिक वर्षा वाले स्थानों पर मुख्यतः बांसवाड़ा में सघन रूप में पाए जाते हैं। वनों का मुख्य वृक्ष- देशी सागवान है। बांसवाड़ा के अलावा - प्रतापगढ़, डूंगरपुर दक्षिणी उदयपुर व आबू पर्वत में तथा झालावाड़ कोटा बारां में थोड़ी पती वाले वन पाए।
→ राज्य के कुल वन क्षेत्र का लगभग 6.86 % भाग में विस्तृत है।

⇒ उष्ण कटिबन्धीय शुष्क या मिश्रित पतझड़ वन दक्षिणी व पूर्वी अरावली के मध्यम ऊंचाई वाले ढालों में, जहां वार्षिक वर्षा औसत 50 से 80 से.मी. रहता है।
विस्तृत- उदयपुर सम्भाग, कोटा सम्भाग सम्पूर्ण।
मुख्य वृक्ष - आम, खैर, ढाक, धोकड़, गुलर, बरगद, साल
ढाक या पलास वन मुख्यतः नदी घाटियों में मिलते।
राज्य के कुल वनों का 28.38% क्षेत्र इन वनों से आच्छादित

⇒ उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन -
केवल आबू पर्वत के चारों ओर 52 कि.मी. क्षेत्र में। वन सघन एवं वर्ष भर हरे भरे रहते हैं।
वानस्पतिक विविधता की दृष्टि से राज्य का सर्वाधिक सम्पन्न क्षेत्र है।
मुख्यतः वृक्ष :- सिरस, बांस, बेल, जामुन, रोहिड़ा।
कुल वनों का क्षेत्र 0.39 प्रतिशत ही है।

RAJASTHAN CLASSES

→ शुष्क एवं मरुस्थलीय वन -
मरुस्थलीय क्षेत्र जहां वार्षिक वर्षा औसत 25 सेमी. है।
वृक्ष - कंटीली झाड़ियां, घास एवं वन
मुख्य वनस्पति - खेजड़ी, बबूल, थूहर, केर
कीकर, बेर, फोग, रोहिड़ा, सेवण, धामण
मुरात, अंजन, करड़, सिरकानियाँ आदि घास।
ये वन राज्य कुल वन क्षेत्र का 6.26 प्रतिशत है।
मुख्यतः जोधपुर एवं बीकानेर सम्भाग।
→ शुष्क वनस्पति को "मरुदभिद" कहते है।
→ जैसलमेर से पोकरण व मोहनगढ़ तक
एक चौड़ी भूगर्भीय जल पट्टी है जिसे
लाठी सीरीज क्षेत्र कहा जाता है।
सेवण घास अत्यधिक मात्रा में उगती है।

→ अर्द्धशुष्क उष्ण कटिबंधीय धोक वन।
अरावली के पश्चिमवर्ती अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में।
क्षेत्र जालौर, झुन्झुनु, सीकर, जोधपुर।
वर्षा का वार्षिक औसत - 30 से 60 सेमी. रहता।
मुख्यतः - धोकड़ा, बबूल, खेजड़ी, रोहिड़ा बेर
केर, थूहर, करुन आदि वृक्ष।
अर्द्धशुष्क वनों का क्षेत्र राज्य के कुल वनों का
लगभग 58.11% है।
→ राज्य में धोकड़ा वन सर्वाधिक है।
→ इन वनों का प्रमुख वृक्ष - धोकड़ा है।
→ सालर वन - उदयपुर, राजसमंद, सिरोही, अजमेर, अलवर
जयपुर एवं चित्तौड़गढ़ में प्रमुखता।
→ खेजड़ी - (शमी वृक्ष) रेगिस्तान का कल्पवृक्ष
→ विस्तार से →

RAJASTHAN CLASSES

खेजड़ी (शमी वृक्ष)

⇒ रेगिस्तान का कल्प वृक्ष कहते है।
⇒ इसकी फली को सांगरी कहा जाता है। जो सुखाकर सब्जी के रूप में प्रयुक्त होती।
⇒ इसकी पत्तियो को "लूम" कहा जाता है।
⇒ खेजड़ी को सिन्धि मे- छोंकड़ा, तमिल में पेयमये पंजाबी व हरियाणवी- जांटी, कन्नड़ में-बन्नी
⇒ इसका वैज्ञानिक नाम - प्रोसोपिस सिनेरेरिया।
⇒ विजया दशमी दशहरे के दिन शमी वृक्ष का पूजन किया जाता है।
⇒ खेजड़ी को 31 अक्टूबर 1983 को राजस्थान का राज्य वृक्ष घोषित किया।

⇒ महुआ- आदिवासियों का कल्पवृक्ष
वानस्पतिक नाम - मधुका लोंगोफोलिया

⇒ रोहिड़ा - मरुस्थल का सागवान
मारवाड़ टीक. राजस्थान की मरु शोभा
वानस्पतिक नाम - टिकोमेला अण्डलेटा
लोकप्रिय राज्य पुष्प रोहिड़ा है।

⇒ लीलोण - जैसलमेर में सेवण घास का नाम
⇒ सेवण का वैज्ञानिक नाम - लेसियुरुस सिंडीकुस

⇒ धोकड़ा का वानस्पतिक नाम - एनोजिस पेंडुला
⇒ पलास का वानस्पतिक नाम - ब्यूटिया मोनोस्पेमा
⇒ कत्था खैर वृक्ष - मुख्यतः - उदयपुर, चित्तौड़गढ़ बून्दी झालावाड़, जयपुर में मिलता है।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ वन्य जीव ⇐
⇒ राष्ट्रीय उद्यान - 3
⇒ वन्य जीव अभ्यारण्य - 26
⇒ कन्जर्वेशन रिजर्व - 13
⇒ आखेट निषिद्ध क्षेत्र - 33
⇒ कुल जन्तुआलय - 5
⇒ जोधपुर जन्तुआलय में गोडावण का प्रजनन।
⇒ जयपुर जन्तुआलय में मगरमच्छ व बाघ प्रजनन

प्रतीक ↓
⇒ राज्यपुष्प - रोहिड़ा 1983 में घोषित।
⇒ राज्यपशु - चिंकारा व ऊंट।
⇒ राज्यपक्षी - गोडावण 1981 में घोषित।
⇒ राज्यवृक्ष - खेजड़ी 31.10.1983 को घोषित।
⇒ राष्ट्रीय वृक्ष - बरगद (वट वृक्ष)
⇒ राष्ट्रीय पुष्प - कमल
⇒ राष्ट्रीय पशु - बाघ, ⇒ राष्ट्रीय पक्षी - मोर।

⇒ राज्य के मृगवन - 7 ⇒
(i) अशोक विहार जयपुर।
(ii) माचिया सफारी पार्क, जोधपुर
(iii) चित्तौड़गढ़ मृग वन, चित्तौड़गढ़
(iv) पुष्कर मृगवन, पचकुण्ड, अजमेर
(v) सजय उद्यान, शाहपुरा (जयपुर)
(vi) सज्जनगढ़ मृगवन, उदयपुर
(vii) अमृतादेवी मृगवन, खेजड़ली (जोधपुर)

RAJASTHAN CLASSES

→ राष्ट्रीय उद्यान ←

1 ⇒ रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान - सवाई माधोपुर
- राज्य का सबसे बड़ा व प्रथम राष्ट्रीय उद्यान।
- राज्य की पहली बाघ परियोजना 1973 में आरम्भ।
- कुल क्षेत्रफल - 282.03 वर्ग कि.मी.
- 1955 में वन्यजीव अभयारण्य घोषित।
- 01.11.1980 को राष्ट्रीय उद्यान घोषित।
- दक्षिण में चम्बल एवं उत्तर में बनास
- मगरमच्छ यहां का दूसरा आकर्षण है।
- दर्शनीय स्थल - जोगी महल, गणेश मन्दिर।
- यहां तीन झीले - पदम तालाब, मलिक तालाब, राजबाग
- देश का सबसे छोटा बाघ अभयारण्य।
- भारतीय बाघो का घर भी कहा जाता है।
- देश में प्रथम बाघ विस्थापन की घटना -
- 28 जून 2008 को बाघ सुल्तान एवं बाघिन बबली को सरिस्का अभयारण्य में छोड़ा गया।
- बाघ परियोजना का जन्मदाता एवं राजस्थान का टाईगर मैन - कैलाश सांखला (जोधपुर)

2 ⇒ केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान - भरतपुर
घना पक्षी विहार (अभयारण्य)
- 27.8.1981 को राष्ट्रीय उद्यान घोषित।
- कुल क्षेत्रफल - 28.73 वर्ग कि.मी.
- 1956 में पक्षी अभयारण्य घोषित
- 1985 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल
- 1 अक्टूबर 1981 को रामसर स्थल घोषित
- साइबेरियन क्रेन (सारस) के आगमन के लिए प्रसिद्ध
- इसे पक्षियों का स्वर्ग कहा जाता है।

RAJASTHAN CLASSES

→ राजस्थान का दूसरा एवं सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान
→ इसके मध्य में शिव केवलादेव का मन्दिर।
→ एशिया की सबसे बड़ी पक्षियों की प्रजनन स्थली
→ यहाँ सन्चा घास में फंसकर सर्वाधिक पक्षी मरते।
→ राज्य की प्रथम वन्य जीव प्रयोगशाला स्थापित
→ कदम्ब के वृक्ष बहुतायत में पाए जाते हैं।
→ पानी अजान बांध से मिलता है।
→ यहाँ बाणगंगा एवं गंभीरी नदी बहती है।

3. → मुकन्दरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान ←
→ राज्य की तीसरी बाघ परियोजना -
→ कोटा व चित्तौड़गढ़ क्षेत्र में स्थित।
→ कुल क्षेत्रफल - 199.55 वर्ग कि.मी.
→ इसे 9 अप्रैल 2013 को टाइगर रिजर्व बनाया।
→ 9 जनवरी 2012 को राष्ट्रीय उद्यान घोषित।
→ [illegible]
→ [illegible]
→ [illegible]
→ [illegible]
→ [illegible]
→ [illegible]
→ [illegible]

RAJASTHAN CLASSES

वन्य जीव अभयारण्य

(1) राष्ट्रीय मरु उद्यान = जैसलमेर व बाड़मेर
- कुल क्षेत्रफल 3162.50 वर्ग कि.मी.
- 4 अगस्त 1980 को वन्यजीव अभयारण्य बना।
- आकल वुड फोसिल पार्क यही पर स्थित है जो जीवाश्मों के लिए प्रसिद्ध है।
- राज्य पक्षी चिंकारा एवं राज्य पक्षी गोडावण के लिए प्रसिद्ध अभयारण्य
- राज्य का सबसे बड़ा वन्यजीव अभयारण्य।
- सोहन चिड़िया, पीवणा (विषैला सर्प) एवं सेवण घास बहुतायत में मिलते है।

(2) सरिस्का वन्य जीव अभयारण्य = अलवर
- राज्य की दूसरी बाघ परियोजना = 1978 प्रारम्भ
- 01 नवम्बर 1955 को अभयारण्य घोषित।
- कुल क्षेत्रफल - 492.29 वर्ग कि.मी.
- क्रासका एवं कांकनबाड़ी पठार स्थित है।
- धार्मिक स्थल - पांडुपोल, भर्तृहरि, नीलकंठमहादेव, लालवृक्ष गढ़ी कामोद, विराटनगर, थानागाजी, कुशलगढ़, बाला किला, अलवर किला, अजबगढ़, भानगढ़ एवं बलदेवगढ़ यहां स्थित है।
- यह अभयारण्य रीसस बन्दर के लिए प्रसिद्ध है।

(3) सरिस्का 'अ' अभयारण्य = अलवर
कुल क्षेत्रफल - 3.01 वर्ग कि.मी.
20 जून 2012 को घोषित।
राज्य का सबसे छोटा वन्य जीव अभयारण्य है।

RAJASTHAN CLASSES

(4) दर्रा वन्य जीव अभयारण्य - कोटा, झालावाड़
कुल क्षेत्रफल - 225.44 वर्ग कि.मी.
⇒ गागरोनी तोते व धोकड़ा वन प्रसिद्ध
⇒ अबली मीनी का महल - खान का दूसरा ताजमहल
⇒ रावण महल स्थित।
⇒ गागरोन का किला यहीं स्थित है।
⇒ यह 01 नवम्बर 1955 को अभयारण्य बना।

(5) सवाई मान सिंह - सवाई माधोपुर
⇒ कुल क्षेत्रफल 113.07 वर्ग कि.मी. है।
⇒ 30 नवम्बर 1984 को वन्य जीव अभयारण्य।

(6) कैलादेवी अभयारण्य - करौली, सवाईमाधोपुर
⇒ कुल क्षेत्रफल 401.63 वर्ग कि.मी.
⇒ मुख्य रूप से यहां धोक वन क्षेत्र है।
⇒ 19 जुलाई 1983 को अभयारण्य बना।

(7) कुंभलगढ़ अभयारण्य - उदयपुर, राजसमंद, पाली
⇒ कुल क्षेत्रफल 610.528 वर्ग कि.मी.
⇒ कुंभलगढ़ के लिए भेड़िए प्रसिद्ध।
⇒ 13 जुलाई 1971 को घोषित
⇒ रणकपुर के जैन मन्दिर इसी क्षेत्र में स्थित।

(8) फुलवारी की नाल - कोटड़ा (उदयपुर)
⇒ कुल क्षेत्रफल 511.41 वर्ग कि.मी. है।
⇒ सोम मानसी, बाकल नदियां निकलती है।
⇒ 6 अक्टूबर 1983 को घोषित।

RAJASTHAN CLASSES

(9) टॉडगढ़ रावली - अजमेर, पाली, राजसमंद
→ कुल क्षेत्रफल 475.235 वर्ग कि.मी. है।
→ 28 सितम्बर 1983 को अभ्यारण्य घोषित।

(10) सीतामाता वन्य जीव अभयारण्य :
चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ एवं उदयपुर
कुल क्षेत्रफल - 422.94 वर्ग कि.मी.
→ चीतल की मातृभूमि, उड़न गिलहरी व
→ चौसिंगा के लिए प्रसिद्ध,
→ चौसिंगा को स्थानीय भाषा में भेंडल कहा जाता है।
→ उड़न गिलहरी को स्थानीय भाषा में आशोवा कहते हैं।
→ गर्म व ठण्डे पानी के दो झरने।
जाखम नदी एवं जाखम बांध इसी में स्थित।
→ यहां सर्वाधिक जैव विविधता मौजूद है।
यह अभयारण्य अरावली, विन्ध्याचल पर्वतमाला तथा मालवा पठार के संगम पर बना हुआ है।

(11) रामगढ़ विषधारी - बून्दी
कुल क्षेत्रफल 307 वर्ग कि.मी.
→ बून्दी नैनवां रोड़ पर रामगढ़ गांव के निकट स्थित।
→ यह राज्य का एकमात्र ऐसा अभयारण्य है जिसमें बाघ परियोजना के अलावा बाघ विचरण करते।
→ इसलिए इसे के बाघों का जच्चा घर कहते हैं
→ यह सांपो हेतु प्रसिद्ध अभयारण्य है।

(12) जमवारामगढ़, जयपुर में स्थित।
क्षेत्रफल - 300 वर्ग कि.मी., 31 मई 1982 में घोषित
→ धोक के वन मुख्यतः पाए जाते हैं।
→ यहां हवाहोदी झील रामगढ़ है।

RAJASTHAN CLASSES

(13) माउन्ट आबू - सिरोही, कुल क्षेत्रफल - 326 वर्ग कि.मी.
- जंगली मुर्गे के लिए प्रसिद्ध
- गुरुशिखर इसी अभयारण्य में है।
- राज्य का एकमात्र पहाड़ी पर स्थित अभयारण्य।
- डिकिल पटेरा आबू एन्सिस घास विश्व में एकमात्र यही पाई जाती है।
- ग्रीन मुनिया नामक चिड़िया आबू पर्वत पर मिलती
- वर्तमान में यह अभयारण्य की श्रेणी में नहीं।

(14) राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभयारण्य -
- कोटा, बून्दी, सवाईमाधोपुर, धौलपुर, करौली (रा. M.P. U.P.)
- कुल क्षेत्रफल. 2745.75 वर्ग कि.मी.
- घड़ियालों (मगरमछ) के लिए प्रसिद्ध
- 7 दिसम्बर 1979 को वन्यजीव अभयारण्य घोषित।
- उदबिलाव, गांगेय सूंस स्तनधारी जीव पाए जाते हैं।

(15) भैंसरोड़गढ़ - चित्तौड़गढ़, क्षेत्रफल - 201.50 वर्ग कि.मी.
- घड़ियालों के लिए प्रसिद्ध. 1983 में अभयारण्य घोषित।
- चम्बल व बामनी नदियों के संगम पर स्थित।
- रावतभाटा में राणासागर बांध पर स्थित।

(16) बस्सी अभयारण्य, चित्तौड़गढ़
- क्षेत्रफल 138.69 वर्ग कि.मी.
- घड़ियालों के लिए प्रसिद्ध। जालेश्वर महादेव का पौराणिक आस्था स्थल।
- जंगली बाघों के विचरण हेतु प्रसिद्ध
- ओरई व बामनी नदी के उद्गम पर स्थित।

RAJASTHAN CLASSES

(17) जवाहर सागर वन्य जीव अभयारण्य
बून्दी, कोटा, चित्तौड़गढ़।
→ कुल क्षेत्रफल 182.11 वर्ग कि.मी.
→ 29 अगस्त 1988 में घोषित।
→ गेपरनाथ का मन्दिर, गरडिया महादेव दर्शनीय स्थल
→ यह एक जलीय अभयारण्य की श्रेणी में आता।
→ उत्तरी भारत का प्रथम सर्प उद्यान।
→

(18) बन्ध बैरठा अभयारण्य - भरतपुर
→ कुल क्षेत्रफल 201.40 वर्ग कि.मी.
→ जरखों के लिए प्रसिद्ध
→ इसे परिन्दो का घर भी कहा जाता है।
→ वाटर फाउल के लिए प्रसिद्ध
→ 7 अक्टूबर 1985 को घोषित।

(19) शेरगढ़ अभयारण्य - बारां (क्षेत्रफल - 81.67 वर्ग कि.मी.)
→ सांपो की शरण स्थली.
→ परवन नदी इसी से गुजरती है।
→ यहां ऐतिहासिक गागधर शिकारगढ़ी है।
→ 30 जुलाई 1983 को वन्य जीव अभयारण्य घोषित।
→

(20) जयसमंद अभयारण्य - उदयपुर = 52.94 वर्ग कि.मी.
→ बघेरो के लिए प्रसिद्ध, 1 नवम्बर 1955 घोषित
→ जलचरों की बस्ती के उपनाम से प्रसिद्ध।
→ बहोरा पक्षियो की आश्रयस्थली।

(21) नाहरगढ़ - जयपुर, क्षेत्र - 52.40 वर्ग किमी.
~~→ राज का एकमात्र जैविक पार्क, → 4 जून 2016 को लोकार्पित~~
→ 22.9.1980 को अभयारण्य, बायोलोजिकल पार्क - भारत का दूसरा

RAJASTHAN CLASSES

(22) रामसागर अभयारण्य - धौलपुर
कुल क्षेत्रफल 34.40 वर्ग कि.मी.
7 नवम्बर 1955 को वन्यजीव अभ्यारण्य घोषित।

(23) वनविहार अभयारण्य - धौलपुर
कुल क्षेत्रफल 25.60 वर्ग कि.मी.
यहां वन विहार कोठी स्थित है।
01 नवम्बर 1955 को वन्यजीव अभयारण्य घोषित

(24) केसरबाग अभ्यारण्य - धौलपुर = 14.76 वर्ग कि.मी.
7 नवम्बर 1955 को घोषित।

(25) लालछापर वन्य जीव अभयारण्य - सुजानगढ़ (चूरू)
→ क्षेत्रफल - 7.19 वर्ग कि.मी. (4 अक्टूबर 1962 को)
→ काले हिरणों व कुरजां के लिए प्रसिद्ध।
→ महाभारत काल में छापर, द्रोणपुर नाम से प्रसिद्ध था. व गुरु द्रोणाचार्य का निवास स्थान था।

(26) सज्जनगढ़, उदयपुर = क्षेत्रफल - 5.19 वर्ग कि.मी.
17 फरवरी 1987 को वन्यजीव अभयारण्य घोषित।
यहां बांसदरा पहाड़ी भी स्थित है।
यहां एक कृत्रिम झील - जियान सागर (बड़ी झील या टाइगर झील के नाम से प्रसिद्ध।
→ राज्य का प्रथम जैविक उद्यान - 12 अप्रैल 2015 को।

→ नोट = बीसलपुर वन्य जीव अभयारण्य - टोंक टोडारायसिंह तह. में स्थित।
माउंट आबू अभयारण्य की जगह। नवीनतम अभयारण्य 2006 में अभयारण्य घोषित।

RAJASTHAN CLASSES

- अन्य महत्वपूर्ण -

⇒ वन प्रशिक्षण केन्द्र ⇐

⇒ राजस्थान वानिकी एवं वन्यजीव प्रशिक्षण संस्थान - जयपुर

⇒ मरुवन प्रशिक्षण केन्द्र - जोधपुर

⇒ राजस्थान वन प्रशिक्षण केन्द्र - अलवर

⇒ ग्रास फार्म नर्सरी, जयपुर

⇒ वन अनुसंधान फार्म, गोविन्दपुरा (जयपुर)

⇒ विश्व वानिकी वृक्ष उद्यान आलना (जयपुर)

⇒ वन अनुसंधान फार्म बांकी (सिलारमा, उदयपुर)

⇒ शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान - जोधपुर

⇒ पुरस्कार ⇐

① अमृता देवी बिश्नोई स्मृति पुरस्कार - वन सुरक्षा वन वानिकी, वन अनुसंधान हेतु उत्कृष्ट कार्य।

② वृक्ष बन्धु एवं वन प्रहरी पुरस्कार - वन सुरक्षा वन्यजीव संरक्षण में उत्कृष्ट कार्य।
राज्य स्तर पर 2000, जिलास्तर पर - 1000/- पुरस्कार
इसके अलावा वानिकी पंडित पुरस्कार (10000) दिया जाता।

③ कैलाश सांखला वन्य जीव संरक्षक पुरस्कार
वन्य जीव संरक्षण क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य।
50,000 + प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

④ राजीव गांधी पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार -
पर्यावरण संरक्षण कार्यों हेतु उत्कृष्ट कार्य किए जाने पर पर्यावरण दिवस 5 जून को प्रदान किया जाता है।

RAJASTHAN CLASSES

दिवस एवं दिन

- विश्व वानिकी दिवस - 21 मार्च
- विश्व पृथ्वी दिवस - 22 अप्रैल
- विश्व जैव विविधता दिवस - 22 मई
- विश्व पर्यावरण दिवस - 5 जून
- वानिकी सप्ताह - 1 से 7 जुलाई
- विश्व ओजोन दिवस - 16 सितम्बर
- वन्य प्राणी सप्ताह - 1 से 7 अक्टूबर

महत्वपूर्ण तथ्य ↓

- खींचन, जोधपुर में रूस, उक्रेन, कजाकिस्तान से कुरजां (क्रेन) बड़ी संख्या में आते हैं।
- सांभर झील में सर्दियों में राजहंस आते हैं।
- चौहटन (बाड़मेर) अच्छे गोंद उत्पादन हेतु प्रसिद्ध
- राज. में सर्वाधिक नुकसान ईंधन के लिए लकड़ी के कारण।
- घास के मैदान या चरागाहों को स्थानीय भाषा में बीड़ कहा जाता है।
- पंचकूटा - 5 प्रकार के फल बीज को मिलाकर सब्जी।
- विदेशी पौधे जो शीघ्रता से उगते हैं।
  (1) मोपेन - (जिम्बाब्वे) (2) इजरायली बबूल (3) होहोबा
- सत्याग्रह उद्यान आउवा - (पाली) में है।
- रस्टी स्पोटेड - रामगढ़ अभयारण्य में सबसे छोटी बिल्ली
- राज. में वन्य प्रबंध हेतु 13 वृत्तों में बांटा है।
- Tiger, Return of The Tiger - कैलाश सांखला द्वारा।
- रोजड़ा - नीलगाय (खुले मैदानी क्षेत्रों में)

RAJASTHAN CLASSES

→ खेजड़ली = खेजड़ली गांव = जोधपुर
अमृतादेवी (इमरती) के नेतृत्व में बिश्नोई सम्प्रदाय स्त्री पुरुषो ने वृक्षों को काटने से बचाने हेतु पेड़ो से लिपटकर अपने प्राणो की आहुति दे दी थी।

⇒ 363 स्त्री पुरुष एवं संवत 1787 में घटना।

⇒ भाद्रपद शुक्ला दशमी को हर वर्ष शहीद दिवस।

⇒ राज्य में जीवो की रक्षार्थ पहला बलिदान सन् 1604 में जोधपुर रियासत के ही रामासड़ी गांव में करमा व गौरा ने बलिदान दिया।

→ पीली किताब - अलवर अंतिम शासक सवाई-तेज सिंह द्वारा तैयार की गई फोरेस्ट रिपोर्ट।

⇒ उदयपुर के मादड़ी गांव में राज्य का सबसे बड़ा "प्रोप रूट" बरगद का वृक्ष है। जो लगभग एक हैक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है।

↓ प्रमुख जन्तुआलय ↓

① जोधपुर जन्तुआलय - 1936 में स्थापित गोड़ावण पक्षी का कृत्रिम प्रजनन केन्द्र है।

② बीकानेर जन्तुआलय - 1922 में स्थापित (वर्तमान बंद)

③ उदयपुर जन्तुआलय - 1878 में गुलाब बाग में स्थापित

④ जयपुर जन्तुआलय - देश का सबसे प्राचीन जन्तुआलय 1876 में रामनिवास बाग में स्थापना।
मगरमच्छो व बाघो का प्रजनन केन्द्र स्थित है।

⑤ कोटा जन्तुआलय - 1954 में स्थापित
सबसे नवीनतम जन्तुआलय।

RAJASTHAN CLASSES

मृगवन -

① सज्जनगढ़ मृग वन - 1.5 वर्ग कि.मी. में फैला स्थापना 1984 सज्जनगढ़ दुर्ग (उदयपुर) मे।

② चित्तौड़गढ़ मृगवन - 1969 में स्थापित

③ पुष्कर मृगवन - अजमेर 1985 में स्थापित

④ अशोक विहार मृगवन - सचिवालय एवं विधानसभा भवन के पास (जयपुर)

⑤ संजय उद्यान मृगवन - राष्ट्रीय राजमार्ग 8 पर (जयपुर)

⑥ माचिया सफारी मृगवन - 1988 में जोधपुर मे। देश का पहला "राष्ट्रीय मरु वानस्पतिक उद्यान"

⑦ अमृतादेवी कृष्ण मृगवन - खेजड़ली गांव - जोधपुर

RAJASTHAN CLASSES

राज्य की बहुउद्देशीय सिंचाई परियोजनाएं

→ भाखड़ा नांगल परियोजना :-
क्षेत्रफल - पंजाब हरियाणा, राजस्थान संयुक्त परि.
इस परियोजना की कुल क्षमता 1534.3 मेगावाट
» इस परियोजना से राज्य मे सर्वाधिक सिंचाई = हनुमानगढ़
» सतलज नदी पर दो बांध - भाखड़ा, नांगल

भाखड़ा बांध - विश्व का दूसरा एवं एशिया का सबसे ऊंचा कंकीट निर्मित गुरुत्व सीधा बांध
प. जवाहर लाल नेहरू द्वारा 22 अक्टूबर 1963 को लोकार्पण
कुल ऊंचाई - 225.55 मीटर लम्बाई 518.16 मीटर
स्थिति - भाखड़ा (बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश)

नांगल बांध
1952 में तैयार सतलज नदी पर भाखड़ा से 13 कि.मी. नीचे बना हुआ है (नांगल रोपड़ पंजाब)
(ऊंचाई - 29 मीटर, लम्बाई - 340.8 मी.)

श्री जवाहरलाल नेहरू ने भाखड़ा नांगल बांध को चमत्कारी विराट वस्तु की संज्ञा दी है।

व्यास परियोजना
व्यास नदी पर स्थित - पंजाब, हरियाणा, राजस्थान
व्यास नदी पर दो बांध बने है - पंडोह बांध एवं पोंग बांध (कांगड़ा, हिमाचलप्रदेश)
पोंग बांध से राजस्थान को विद्युत 59% एवं पंडोह बांध विद्युत गृह से 20% विद्युत प्राप्ति।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ चम्बल नदी परियोजना
राजस्थान व मध्यप्रदेश की 50:50 साझेदारी।
राज्य को इस परियोजना से 193 मेगावाट (50%)
विद्युत प्राप्त होती है।
↓ योजना में निर्मित बांध
⇒ गान्धी सागर बांध. मंदसौर (मध्यप्रदेश)
क्षमता - 115 मेगावाट ऊंचाई - 64 मीटर
स्थापना - 1959 ई. में
⇒ कोटा बैराज - 1960 में निर्मित
⇒ राणा प्रताप सागर बांध - चित्तौड़गढ़
क्षमता - 172 मेगावाट, स्थापना - फरवरी 1970
⇒ जवाहर सागर बांध, बोरावास, कोटा (1972 में)
क्षमता - 99 मेगावाट, ऊंचाई 45 मी० लम्बाई 39 मी.

। माही बजाज सागर परियोजना।
राजस्थान व गुजरात की बहुउद्देशीय परियोजना।
बांसवाड़ा - माही बजाज सागर बांध
गुजरात - कडना बांध
बांसवाड़ा व डूंगरपुर जिले को आपूर्ति
⇒ स्वतंत्रता सेनानी जमनालाल बजाज के नाम
पर माही बजाज सागर नाम रखा गया।
⇒ माही बजाज सागर बांध - 3109 मीटर लम्बा
1 नवम्बर 1983 को राष्ट्र को समर्पित।
⇒ मुख्य बांध के नीचे कागदी पिकअप बांध
मुख्य बांध पर दो विद्युत गृहों का निर्माण।
50 मेगावाट और 90 मेगावाट।

RAJASTHAN CLASSES

॥ राज्य की प्रमुख वृहद् सिंचाई परियोजना ॥

⇒ इस परियोजना की रूपरेखा प्रथम बार बीकानेर रियासत के मुख्य सिंचाई अभियंता श्री कंवरसेन द्वारा 1948 में प्रस्तुत की गई।

⇒ रावी व व्यास नदियों के जल से आवंटित

⇒ राजस्थान की जीवन रेखा

= आधारशिला 31 मार्च 1958 को तत्कालीन गृह मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत द्वारा।

⇒ 11 अक्टूबर 1961 को उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् द्वारा प्रथम बार नौरंगदेसर वितरिका से पानी छोड़ा गया।

⇒ सतलज व्यास संगम पर बने हरिके बैराज = उद्गम

⇒ इसकी कुल लम्बाई 649 कि.मी. है।
204 कि.मी. लम्बी फीडर, 445 किमी. लम्बी मुख्य नहर

⇒ इन्दिरा गान्धी नहर से 9 मुख्य शाखाएं निकलती
(1) रावतसर - हनुमानगढ़, (2) सूरतगढ़ (3) अनूपगढ़ = गंगानगर
(4) पूगल (5) दातौर (6) बिरसलपुर, (7) चारणवाला = बीकानेर
(8) शहीद बीरबल - (9) सागरमल गोपा = जैसलमेर

⇒ नहर प्रणाली से 7 लिफ्ट नहरें निकलती है।
(1) चौधरी कुंभाराम लिफ्ट नहर - हनुमानगढ़ चुरू बीकानेर झुन्झुनु।
(2) कंवरसेन लिफ्ट नहर - बीकानेर, गंगानगर (सबसे लम्बी)
(3) पन्नालाल बारूपाल लिफ्ट नहर - बीकानेर, नागौर
(4) वीर तेजाजी लिफ्ट नहर - बीकानेर
(5) डा. करणी सिंह लिफ्ट नहर - जोधपुर, बीकानेर
(6) गुरु जम्भेश्वर लिफ्ट नहर - जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर
(7) जयनारायण व्यास लिफ्ट नहर - जैसलमेर, जोधपुर

RAJASTHAN CLASSES

→ राजस्थान में नहर का प्रवेश मसीतावली (हनुमानगढ़) से होता है।
→ राज. में फीडर की लम्बाई 34 कि.मी. है।
→ सर्वप्रथम सिंचाई 1961 में प्रारम्भ।
इससे राजस्थान के 10 जिले लाभान्वित ↓
हनुमानगढ़, गंगानगर, बीकानेर, चुरू
जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, नागौर
सीकर, झुन्झुनु (10 जिले)

→ मुख्य नहर का निर्माण दिसम्बर 1986 में ही पूर्ण कर लिया था।
अंतिम छोर मोहनगढ़ (जैसलमेर) तक
2 जनवरी 1987 को पानी प्रवाहित कर दिया।

' मुख्य पेयजल परियोजनाएं।
① कंवरसेन लिफ्ट परियोजना - 5 जुलाई 1968 को आरम्भ।
मुख्य नहर के बिर्धबाल हेड से निकली इस नहर की लम्बाई 151.64 कि.मी. है।

② राजीव गान्धी लिफ्ट नहर - जोधपुर जिला
नाम परिवर्तित - राजीव गांधी जलोत्थान नहर।

③ आपणी योजना (गन्धेली साहबा परियोजना)
हनुमानगढ़, चुरू, एवं झुन्झुनु।

→ इन्दिरा गान्धी नहर राजस्थान में 480 एवं बाहर 169 कि.मी. है। पूर्व नाम राजस्थान नहर था 2 नवम्बर 1984 को बदलकर इन्दिरा गांधी नहर।

RAJASTHAN CLASSES

⟹ गंगनहर परियोजना (बीकानेर नहर)
⟹ राज्य की प्रथम सिंचाई परियोजना
बीकानेर महाराजा गंगासिंह द्वारा 1921-27 की अवधि में निर्मित। आधारशिला - 5 सितम्बर 1927
उद्घाटन - 26 अक्टूबर 1927 को लॉर्ड इरविन (वायसराय)
⟹ सतलज नदी से उद्गम (फिरोजपुर, पंजाब)
⟹ चूने से निर्मित मुख्य बीकानेर नहर की कुल लम्बाई - 129 कि.मी. (112 पंजाब) 17 कि.मी. राजस्थान (शिवपुर, गंगानगर) तक
नहर की सिंचाई क्षमता - 3.08 लाख हैक्टेयर

⟹ राजीव गान्धी सिद्धमुख व नोहर सिंचाई परियोजना
शिलान्यास - 5 अक्टूबर 1989 को, भिरानी गांव में
लोकार्पण - 12 जुलाई 2002
लाभान्वित जिले - नोहर व भादरा (गंगानगर) राजगढ़ (चूरू) के कुल 113 गांव लाभान्वित

इन्दिरा नहर परियोजना
— सरदार सरोवर बांध (458 कि.मी. गुजरात, राज. - 74 कि.मी.)
फव्वारा सिंचाई परियोजना से पहली पद्धति।
राजस्थान में प्रवेश - मार्च 2008 में सांचोर (जालोर)
लाभान्वित जिले - जालोर व बाड़मेर
निर्माणाधीन लिफ्ट नहरें - सांचोर लिफ्ट नहर, भादरेजा लिफ्ट नहर, पनोरिया लिफ्ट नहर।

बीसलपुर परियोजना
प्रारम्भ - 1988-89। 574 मीटर लम्बा एवं 39.5 मीटर ऊंचा बांध टोडाराय सिंह (टोंक) के पास बनास नदी पर बना।
लाभान्वित क्षेत्र - जयपुर, अजमेर, केकड़ी, नसीराबाद, सरवाड़, ब्यावर, किशनगढ़।

RAJASTHAN CLASSES

→ ईसरदा बांध परियोजना -
→ ईसरदा गांव (टोंक व सवाईमाधोपुर) में बनास पर
→ लाभान्वित जिले - जयपुर, टोंक, सवाईमाधोपुर

⇓ अन्य वृहद् परियोजनाएं ⇓

→ भीखाभाई सागवाड़ नहर - माही नदी पर
125 कि॰मी॰ लम्बी (डूंगरपुर व सागवाड़ा)

→ जाखम परियोजना - अनुपपुरा (प्रतापगढ़)
जाखम नदी पर निर्मित बांध
परियोजना 1997-1998 में पूर्ण (प्रतापगढ़ जिला)

→ गुड़गांव नहर - भरतपुर जिले में सिंचाई सुविधा
यमुना लिंक नहर नाम बदला गया।

→ भरतपुर नहर - 28 कि॰मी॰ लम्बी 1964 कार्य पूर्ण
→ यमुना जल सिंचाई परियोजना - भरतपुर, झुंझुनूं
→ भीमसागर - झालावाड़
→ अरवाड़ - भीलवाड़ा
→ मानसी वाकल परियोजना - गोराना गांव (उदयपुर)
देवास बांध (अलसीगढ़ बांध) पिछोला झील तक पानी लाया जा रहा है।
लम्बी सुरंग 4.6 किमी व जून 2006 को निर्मित
देश की सबसे लम्बी सुरंग (जल सुरंग)
→ रैनी बांध - अलवर में

RAJASTHAN CLASSES

RAJASTHAN CLASSES

पीडीएफ के किसी भी भाग पर क्लिक करने पर आपको youtube क्लास मिल जाएगी

सभी पीडीएफ निशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी
पीडीएफ को ज्यादा से ज्यादा शेयर जरुर करें
आपके हित में सदैव तत्पर : आदर्श कुमावत

राजस्थान क्लासेज : 8107670333

राजस्थान क्लासेज के साथ जुड़कर अपनी तैयारी को पंख दीजिये और विषयानुसार बनी प्लेलिस्ट से पढ़कर अपनी तैयारी बेहतर करें

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

RAJASTHAN CLASSES